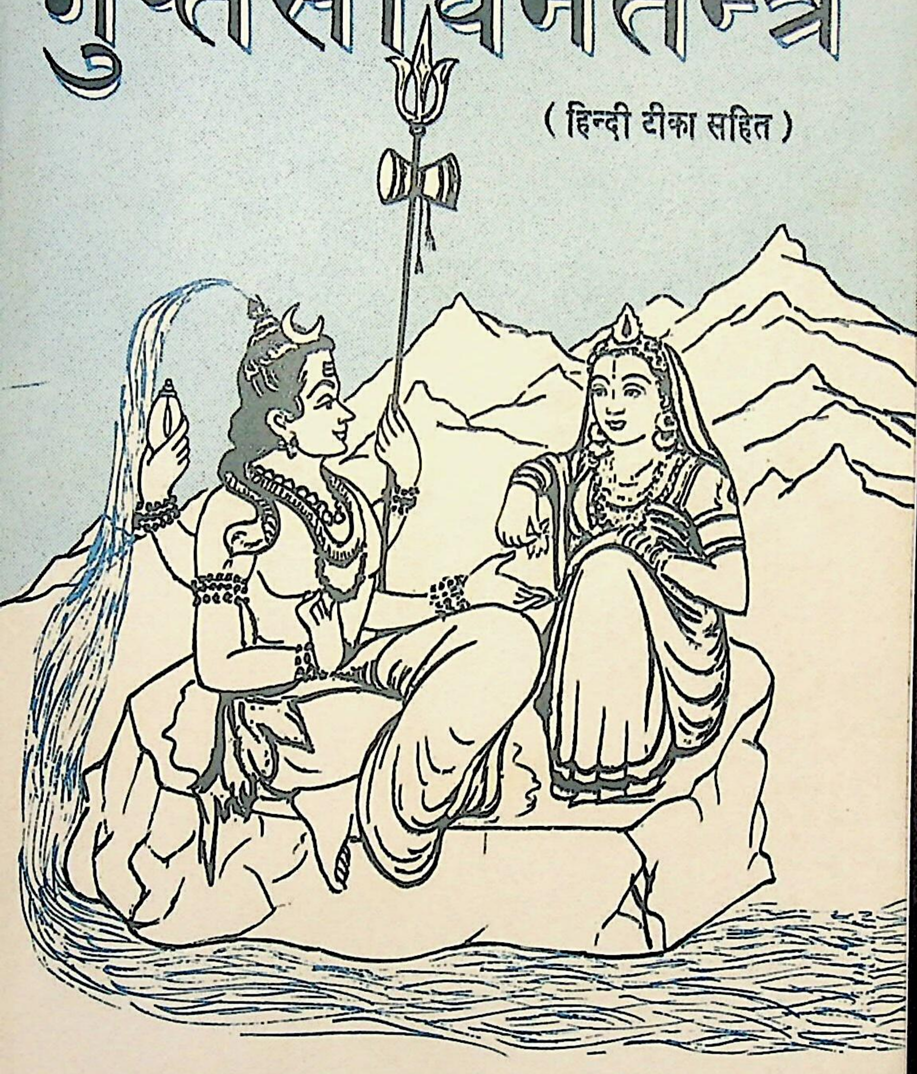
गुप्तसाधनतन्त्र

(हिन्दी टीका सहित)



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

॥ श्रीः ॥

भूतभावन भगवान् महादेव प्रणीत-

गुप्तसाधनतन्त्र।

मुरादाबादस्थ स्वर्गीय सुखानन्द मिश्रात्मज

पं० बलदेव प्रसाद मिश्रकृत-

भाषाटीकासमेत.

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : फरवरी २०१७ संवत् २०७३

मूल्य : ७० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका।

तंत्रशब्दसे श्रीशिवजीका कहाहुआ शास्त्र लियाजाता है. स्वभावहीसे दयावती श्रीपार्वतीजीने लोगोंके उपकारके लिये नाना प्रकारसे प्रश्न कियेहैं उन्हींके उत्तर श्रीशङ्करजीने दियेहैं । यह श्रीशिवाशिवसंवादही तन्त्रोंके नामसे व्यवहृत होता है—यह "गुप्तसाधन तंत्र" भी उनमेंसे एक है। किसी बड़े प्रयोजनीय विषयको गुप्त रखनेको भी तंत्र कहतेहैं। राजनीतिमें तो ऐसा तंत्र (गुप्तविचार) सदा हुआही करता है। पहले जब भारतवर्षमें इसी विचारकी सावधानीसे रक्षा कीजाती थी तो कभी राष्ट्रीय कार्यमें निष्फलता नहीं होती थी।

तंत्रमार्गमें भी बडी उन्नति उस बीचमें हुई यहांतक कि लोग इसी शास्त्रसे सबकुछ सिद्ध करलेते थे। यह ठीकभी है कोई भी काम हो जब वह साङ्गोपाङ्ग सिद्ध कियाजाता है तो अवश्यही फलदायक होता है।

इस तंत्रमें गुरुशिष्यभाव तंत्रशास्त्रकी आवश्यकता और उसके गुप्त रखनेका प्रयोजन, मंत्रसिद्ध करनेवालेके आचार विचार और नियम मंत्र जपनेकी संख्या इत्यादि उपयोगी कई बातें लिखी हुई

हैं । केवल इसी ग्रंथके अनुसार मनुष्य यत्न करै तो सब कार्य सिद्ध होसकतेहैं । इस समयमें वैसे विज्ञ गुरुके अभावसे चाहै कार्य न हो पर जैसे लक्षण इसमें गुरु तथा शिष्योंके लिखेहैं ऐसा यत्न किया जाय और वैसे योग्य गुरु शिष्य होजायँ तो कार्यसिद्धिमें कुछ भी आपत्ति न आवे । तंत्रशास्त्रके प्रेमी इसको देखकर इससे लाभ उठावें इस आशयसे हम इसका आविष्कार करते हैं ।

इति ।

आपका कृपाभिलाषी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष-बंबई.

॥ श्रीः ॥

ॐ गुरवे नमः ॥

गुप्तसाधन-तन्त्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।

प्रथमः पटलः १.

कैलासशिखरेरम्येनानारत्नोपशोभिते ।
तंकदाचित्सुखासीनंभगवन्तंत्रिलोचनम् ॥
पप्रच्छपरयाभक्त्यादेवीलोकहितेरता ॥ १ ॥

एक समय भगवान् महादेवजी, अनेक प्रकारके रत्नोंसे शोभायमान मनोहर कैलासपर्वतके शिखरपर सुखसे विराजमान थे, इसही समयमें देवी पार्वती जी लोकहितसाधनकी कामनासे परमभक्तिके साथ महादेवजीसे पूंछती हुई ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेवमहादेवलोकानुग्रहकारक ।
कुलाचारस्यमाहात्म्यंपुरैवसूचितंत्वया ॥ २ ॥

पार्वती जी बोलीं, हे देवदेव ! तुम देवताओंमें श्रेष्ठ हो, सदा लोकोंपर अत्यन्त अनुग्रह प्रगट किया करते हो । हे नाथ ! पहिले तुमने कुलाचारके माहात्म्यको प्रगट किया है ॥ २ ॥

तत्कथंगोपितंदेवममप्राणेश्वरप्रभो ।
कथयस्वमहाभागयद्यहंतवबल्लभा ॥ ३ ॥

हे प्राणेश्वर ! इस समय उस कुलाचारके माहात्म्यको किस कारणसे छिपाया ? सो मुझसे कहो । हे महाराज ! जो तुम मुझको प्राणप्यारी समझते हो, तो इस समय मुझसे उस गुप्तकुलाचार माहात्म्यको प्रकाश करो ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ।

श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामिसारात्सारंपरात्परम् ।
तवस्नेहान्महादेविदासोऽस्मितवसुन्दरि ॥
तत्कथांकथयिष्यामिसावधानावधारय ॥ ४ ॥

शिवजी बोले, हे देवी ! मैं तुमसे सारतर परम तत्त्वभूत छिपानेके योग्य वार्त्ता कहता हूं, सुनो । हे महादेवी ! मैं सदासे तुम्हारा दासहूं, हे सुन्दरि ! तुम्हारे प्रति मेरी अचल श्रद्धाहै, मैं उसही श्रद्धा के वशमें हो कुलाचारका गुप्त माहात्म्य वर्णन करूंगा । इस कुलाचारकी वार्त्ता को गुप्त रखना उचितहै । अतएव इस वार्ता को अतिसावधानतासे श्रवण करो ॥ ४ ॥

कुलाचारंमहाज्ञानंगोप्तव्यंपशुशङ्कटे ।
प्रगोप्तव्यंमहादेविस्वयोनिरिवपार्वति ॥ ५ ॥

हे पार्वती ! यह कुलाचार महाज्ञानका साधनहै, जो इस कुलाचारके अनुसार साधन करता है, वह तत्त्वज्ञानको प्राप्त करलेता है। इस महाज्ञानके देनेवाले कुलाचारको सदा पश्वाचारीके निकट अपनी योनिकी समान गुप्त रक्खै ॥ ५ ॥

वेदागमपुराणानिवेदशास्त्राणिपार्वति ।
एतन्मध्येसारभूतंकुलाचारंसुदुर्लभम् ॥ ६ ॥

हे पार्वती ! वेद, आगम, पुराण, और वेदान्तादि यह समस्त सारभूत शास्त्र हैं, और इनके मध्यमें भी कुलाचार सारतमहै, अतएव यह परमदुर्लभहै ॥ ६ ॥

वक्त्रकोटिसहस्रैस्तुजिह्वाकोटिशतैरपि ।
कुलाचारस्यमाहात्म्यंवर्णितुंनैवशक्यते ॥ ७ ॥

सहस्र कोटि मुख और सौकरोड जिह्वा द्वारा भी कोई इस कुलाचारके माहात्म्य को वर्णन नही करसकता ॥ ७ ॥

किञ्चिन्मयातुचापल्यात्कथ्यतेतच्छृणुष्वमे ।
शक्तिमूलंजगत्सर्वंशक्तिमूलंपरन्तपः ॥ ८ ॥

हे देवि ! तुमसे उस कुलाचार का वर्णन करना केवल मेरी चपलता है, तोभी तुमसे किंचिन्मात्र अपनी शक्तिके अनुसार

वर्णन करताहूं, श्रवण करो। शक्तिही अनन्त जगत्की आदिकारण है और शक्ति ही समस्त तपस्या की मूल है ॥ ८ ॥

शक्तिमाश्रित्यनिवसेद्यत्रकुत्राश्रमेवसन् ।
साधकस्यार्चितांशक्तिंसाधकज्ञानकारिणीम्॥९॥

साधकगण शक्तिका आश्रय करके चाहें जिस आश्रममें बास करें, उसमेंही वह सिद्धि प्राप्त करसकते हैं। शक्तिकी अर्चना करतेही वह साधकोंको ज्ञान देती है ॥ ९ ॥

इहलोकेसुखंभुक्त्वादेवीदेहेप्रलीयते ।
साधकेन्द्रोमहासिद्धिंलब्ध्वायातिहरेःपदम् ॥१०॥

शक्तिकी आराधना करनेवाला साधक, इस लोकमें विविध सुखभोग करके देवीकी देहमें लीन होजाता है और वह साधकों में इन्द्र महासिद्धको प्राप्त करके अन्तमें नारायणके पदको प्राप्त हो जाता है ॥ १० ॥

पञ्चाचारेणदेवेशिकुलशक्तिम्प्रपूजयेत् ।
नटीकापालिकीवेश्यारजकीनापिताङ्गना ॥ ११॥
ब्राह्मणीशूद्रकन्याचतथागोपालकन्यका ।
मालाकारस्यकन्याचनवकन्याःप्रकीर्तिताः॥१२॥

हे देवेशि ! पंचोपचारके क्रमानुसार कुलशक्तिकी अर्चना करे। नटी, कापालिककी कन्या, वेश्या, धोवन, नायन, ब्राह्मणी, शूद्र-

कन्या, गोपकन्या, और मालाकार कन्या यही नव कन्या कहलाती हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

विशेषवैदग्ध्ययुताःसर्वाएवकुलाङ्गनाः ।
रूपयौवनसम्पन्नाःशीलसौभाग्यशालिनीः ॥१३॥

विशेषकरके विशेष गुणशालिनी हो, इसप्रकारकी सर्वजातीयरूप यौवनवाली, सुशीला और सौभाग्यवती कन्या भी कुलाङ्गनाकी भांति ग्रहण की जासकती हैं ॥ १३ ॥

पूजनीयाःप्रयत्नेनततःसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
सत्यंसत्यंमहादेविसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ १४ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
प्रथमः पटलःसमाप्तः ॥ १ ॥

इन समस्त कुलाङ्गनाओंकी यत्नसहित पूजा करे। इस प्रकारकी अर्चना करनेसे साधकको निश्चयही सिद्धि प्राप्त हुआ करती है। हे महादेवि ! हमारे इस वाक्यको सत्य २ जानो, इस में कुछभी संशय नहीं करना चाहिये ॥ १४ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
प्रथमः पटलः समाप्तः ॥ १ ॥

द्वितीयः पटलः २.

श्रीपार्वत्युवाच ।

बाधेतमांकृपानाथमुहुःप्रष्टुंयदुत्सहे ।
स्त्रियःस्वभावचपलानशङ्केऽहम्पुनःपुनः ॥ १ ॥

पार्वतीजी बोलीं ! हे कृपामय ! तुमसे जो बारम्बार प्रश्न करने का मेरा अभिलाष होता है, तिससे लाज आती है, तथापि स्त्री जातिका स्वभाव अत्यन्त चपल होनेके कारणही मैं बारम्बार बूझतीहूं और उसमें शंका नहीं होती ॥ १ ॥

यदुक्तंकृपयानाथरहस्यम्परमाद्भुतम् ।
गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुगुरुर्देवोगुरुर्गतिः ॥ २ ॥
गुरुस्तीर्थंगुरुर्यज्ञोगुरुर्दानंगुरुस्तपः ।
गुरुरग्निर्गुरुःसूर्यःसर्वंगुरुमयञ्जगत् ॥ ३ ॥

हे नाथ ! आपने मेरे ऊपर पहिलेही कृपा करके परम आश्चर्य अद्भुत रहस्य को प्रकाशित किया है । तिसमें उपदेश किया कि, ब्रह्मा, विष्णु सर्व देवता, सबका आश्रय, तीर्थ, यज्ञ, दान, तपस्या, अग्नि, सूर्य और सर्व जगत स्वरूप जो है सो गुरूहीहै ॥ २ ॥ ३ ॥

किमनेनाकिन्तपसाकिमन्यत्तीर्थसेवया ।
श्रीगुरोरर्चितौयेनपादौतेनार्चितंजगत् ॥ ४ ॥

यदि गुरुही सर्वमय हुआ तो इस तपस्या व अन्यान्य तीर्थसेवा द्वारा कौनसे अधिक फलकी आशा की जासकतीहै ? आपके उपदेशसे जाना जाताहै कि जो गुरुदेव के दोनोंचरण कमलकी अर्चना करताहै, उसने मानो समस्त जगत की अर्चना करने का फल पालिया ॥ ४ ॥

ब्रह्माण्डभाण्डमध्येतुयानितीर्थानिसान्तिवै ।
गुरोःपादोदकेतानिनिवसन्तिहिसन्ततम् ॥ ५ ॥

और अनन्त ब्रह्माण्ड में जितने तीर्थ विद्यमानहैं, गुरुजीके चरणाम्रृत में भी वे समस्त तीर्थ वास किया करतेहैं ॥ ५ ॥

गुरोःपादोदकंयेनशिरसापुण्यभाग्भवेत् ।
सर्वतीर्थजलम्पुण्यंलभतेनात्रसंशयः ॥ ६ ॥

जो गुरुजी के चरणाम्रृतको मस्तकपर धारण किया करतेहैं, वह सर्वप्रकार पुण्य भाजन हुआ करतेहैं, और इसमें संशय नहीं कि सब तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्तकर सकतेहैं ॥ ६ ॥

इतितस्यगुरोर्ध्यानंतत्त्वतःश्रोतुमुत्सहे ।
लब्धत्वदर्द्धदेहांमांकथंवञ्चयसिप्रभो ॥
मयिस्नेहानुबन्धोऽस्तियदितन्मेप्रकाशय ॥ ७ ॥

हे प्रभो ! आपने इसप्रकारके गुरु माहात्म्य को मुझसे कीर्त्तन कियाहै, इस समय उन गुरुदेवका ध्यान श्रवण करनेके लिये मुझ को अत्यन्त कौतूहल उत्पन्न हुआहै । हे नाथ ! मैंने आपकी देह के

अर्द्धभाग को प्राप्त कियाहै, मुझको क्यों बंचना करते हो ? हे प्रभो! यदि मेरे प्रति आपका स्नेह और अनुराग हो तो गुरुके स्वरूपको मुझसे प्रकाश कीजिये ॥ ७ ॥

श्रीशङ्कर उवाच ।

नवञ्चयामिदेवित्वांप्राणेभ्योऽपिगरीयसीम् ।
स्त्रीणांस्वभावचापल्याद्गोपितंनप्रकाशितम् ॥८॥

महादेव जी बोले ! हे देवि ! तुम हमारे प्राणों से भी अधिक हो, तुमको भुलावा नहीं देता, केवल स्त्रियों का स्वभाव चंचल होने के कारणही अबतक प्रकाशित नहीं किया ॥ ८ ॥

कथयामितवस्नेहाच्छ्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
प्रकाश्यञ्चकुलीनेषुनप्रकाश्यंपशौक्वचित् ॥ ९ ॥

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से वशीभूत हो श्रीगुरुजी के ध्यानको कहता हूं । जो लोग कुलाचार में तत्परहैं, उनसेही इस ध्यानका प्रकाशित करना उचितहै, कदापि पश्वाचारी से इस ध्यान को न कहे ॥ ९ ॥

कुलः शक्तिःसमाख्याताअकुलःशिवउच्यते ।
तस्यांलीनोभवेद्यस्तुसकुलीनःप्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

शक्तिकोही कुल कहाहै और शिवको अकुल कहते हैं । जो उस शक्तिमें लीनहैं, उनको ही कुलीन नाम से पुकारागयाहै ॥ १० ॥

कुलवृक्षान्नमस्कृत्यगुरुंध्यायेत्पराम्बुजे ।
शरच्चन्द्रसमाभासंशरत्पङ्कजलोचनम् ॥ ११ ॥
ईषद्धास्यंशारदीयपूर्णेन्दुसदृशाननम् ।
दिव्यस्त्रगम्बरधरंदिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १२ ॥
सुरक्तशक्तिसंयुक्तवामभागमनोहरम् ।
वराभयकराम्भोजंसर्वलक्षणलक्षितम् ॥
सहस्रारेमहापद्मेगुरुंशिरसिचिन्तयेत् ॥ १३ ॥
एतत्तेकथितंदेविश्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
गोपनीयंप्रयत्नेननप्रकाश्यङ्कदाचन ॥ १४ ॥
इतितेकथितंसर्वंतवस्नेहेनसुन्दरि ।
किमन्यत्संप्रवक्ष्यामिकथयस्वशुचिस्मिते ॥ १५॥

समस्त कुल वृक्षों को नमस्कार करके सहस्रदलवाले कमल में गुरुजी का ध्यान कर, गुरुजी के देहकी कान्ति शरदकालके पूर्ण चन्द्रमा की समान उज्ज्वलहै। इनके दोनों नेत्र शरद ऋतुके कमल की नांई बड़े २ हैं। गुरुजी का वदन शरदऋतुके पूर्ण चन्द्रमा की समान विराजमान रहताहै। गुरुदेव दिव्य वसनधारी है । इनके समस्त अंगोंमें सुगन्धपूर्ण दिव्य अनुलेपन लगा हुआहै । गुरुजी-के बांयें भाग में लालवर्ण की शक्ति विराजमान हैं, दोनों करकम-लोंमें वर व अभय मुद्राहै, यह सर्वप्रकार के शोभित लक्षणोंसे

लक्षित हैं। शिरमें स्थित सहस्रदलवाले कमलमें इस प्रकारके लक्षणवाले गुरुजीका ध्यान करे ॥ ११ ॥ १२ ॥१३॥ हे देवि ! इसप्रकारसे श्रीगुरुजीका उत्तम ध्यान तुमसे कहा,तुम सदा इसको यत्न सहित गुप्त रक्खो, कदापि प्रगट मत करो ॥१४॥ हे सुंदरि ! तुम्हारे स्नेह के बशसे इस प्रकार श्रीगुरुजी का स्वरूप प्रकाश किया, और क्या कहूं ? सो कहो ॥ १५ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ।

गुरोर्ध्यानंश्रुतन्नाथसर्वतन्त्रेषुगोपितम् ।
स्त्रियादीक्षाशुभाप्रोक्तासर्वकामफलप्रदा ॥ १६ ॥

पार्वतीजीने कहा हे नाथ ! समस्त तन्त्रों में छिपाया हुआ श्रीगुरुजी का ध्यान श्रवण किया, अब स्त्रियोंमें ली हुई दीक्षा के श्रवण करने का अभिलाष मुझको हुआ है। तंत्र में कहाहै कि स्त्री-गुरुसे दीक्षित होवें तो वह दीक्षा शुभदायी होती है, और सर्वप्रकार काम्य फलकी देनेवाली होती है ॥ १६ ॥

बहुजन्मार्ज्जितात्पुण्याद्बहुभाग्यवशाद्यदि ।
श्रीगुरुर्लभ्यतेनाथतस्यध्यानंतुकीदृशम् ॥ १७ ॥

अनेक जन्मों के किये हुए पुण्य बलसे और बडे भाग्यसेही स्त्री गुरु मिलती है, तो फिर किसप्रकार से उसका ध्यान करना चाहिये ॥ १७ ॥

कुलीनस्त्रीगुरोर्ध्यानंश्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ।
कथयस्वमहाभागयद्यहंतववल्लभा ॥ १८ ॥

हे महाभाग ! इस समय मैं कुलीन स्त्री गुरुका ध्यान श्रवण करने की इच्छा करती हूं, यदि मुझपर आपका अनुग्रह हो तो उस ध्यानको वर्णन कीजिये ॥ १८ ॥

श्रीशङ्कर उवाच ।

शृणुपार्वतिवक्ष्यामितवस्नेहपरिप्लुतः ।
रहस्यंस्त्रीगुरोर्ध्यानंयत्रध्येयाचसागुरुः ॥ १९ ॥

महादेवजीने कहा हे पार्वति मैं तुम्हारे स्नेह के बशीभूत हो अति गुप्त रखने योग्य स्त्री गुरुका ध्यान कहताहूं, इस ध्यानके अनुसारही साधक लोगोंको स्त्री गुरूके स्वरूपका ध्यान करना चाहिये ॥ १९ ॥

सहस्रारेमहापद्मेकिञ्जल्कगणशोभिते ।
प्रफुल्लपद्मपत्राक्षींघनपीनपयोधराम् ॥ २० ॥

केशर समूह में शोभित सहस्रदलवाले कमलमें स्थित शक्ति रूपिणी स्त्री गुरुका ध्यान करना चाहिये। इसके दोनों नेत्र खिलेहुए कमलदलकी समान बडे हों, दोनों स्थूल पयोधर परस्पर सटे रहकर शोभा पा रहे हैं ॥ २० ॥

सहस्रवदनांनित्यांक्षीणमध्यांशिवांगुरुम् ।
पद्मरागसमाभासांरक्तवस्त्रसुशोभनाम् ॥ २१ ॥

रत्नकङ्कणपाणिश्चरत्ननूपुरशोभिताम् ।
शरदिन्दुप्रतीकाशवक्त्रोद्भासितकुण्डलाम् ॥
स्वनाथवामभागस्थांवराभयकराम्बुजाम् ॥ २२ ॥

यह सहस्त्रवदना और नित्या हैं अर्थात् न इनकी उत्पत्ति है न प्रलय है, शिव शक्ति रुपी स्त्री गुरुकी कमर अति पतली है, इनके देहकी कान्ति पद्मराग मणिकी समान है, यह लाल रंग के वस्त्र पहरकर शोभायमान हो रही हैं, दोनों हाथों में रत्न जडे कंकण और दोनों पांवमें रत्नजडी पायजेब विद्यमान हैं, शरत्काल के पूर्ण चन्द्रमा के विशद कान्तिपूर्ण बदन में कुंडल युगल शोभा को प्राप्त होरहे हैं । यह अपने स्वामी की बांई ओर बैठी हैं, दोनों हाथोंमें वर और अभय मुद्रा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

इतितेकथितंदेविस्त्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
गोपनीयम्प्रयत्नेननप्रकाश्यंकदाचन ॥ २३ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
द्वितीयः पटलः समाप्तः ॥ २ ॥

हे देवि ! यह स्त्री गुरुका उत्तम ध्यान तुमसे प्रकाशित किया, तुम यत्न सहित इस ध्यानको गुप्त रखना, कदापि प्रकाशित मत कीजिये ॥ २३ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
द्वितीयः पटलः समाप्तः ॥ २ ॥

तृतीयः पटलः ३.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेवभक्तानांमुक्तिदायक ।
तवप्रसादात्प्राणेशश्रुतंसाधनमुत्तमम् ॥ १ ॥
पञ्चांगोपासनांदेवरहस्यादिपुरस्क्रियाम् ।
तत्सर्वंब्रूहिमेदेवयदिस्नेहोस्तिमांप्रति ॥ २ ॥

पार्वतीजी कहने लगीं, हे देवदेव ! आप भक्तजनों को मुक्ति के देनेवाले हैं, हे प्राणेश्वर ! आपके प्रसादसे उत्तम साधन को सुना ॥ १ ॥ हे नाथ ! इस समय रहस्य को प्रकाश करके पंचांगोपासना कहिये हे देव ! यदि मेरे पर आपका स्नेह हो तो पंचांगोपासना का समस्त विवरण प्रकाश कीजिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

दिवारात्रिप्रभेदेनजपेन्मन्त्रमनन्यधीः ।
न्यूनाधिकंजपेन्नैवदूषणंनास्तिपार्वति ॥ ३ ॥

महादेवजी कहते हुए, साधक एकान्त चित्त हो दिवारात्रि के भेद से जप करे । प्रति दिन एक नियम से जप करना चाहिये । किसी दिन कम या किसी दिन अधिक जप न करे । हे पार्वति ! इस नियम का साधन करने से किसी प्रकार का दोष नहीं हो सकता ॥ ३ ॥

पञ्चाचारेणदेवेशिसर्वंकार्यंजपादिकम् ।
स्वेच्छाचारोऽत्रगदितोमहान्त्रस्यसाधने ॥ ४ ॥

हे देवेशि ! जपादि समस्त कार्यही पंचाचार के क्रमसे करने में इस प्रकार का स्वेच्छाचार कहा गया । सबही अपनी इच्छा के अनुसार जपसंख्या का नियम कर सकतेहैं ॥ ४ ॥

प्रत्यहंपरमेशानिएकैकंविप्रभोजनम् ।
प्रातःकालंसमारभ्यजपेन्मध्यदिनावधि ॥ ५ ॥

हे परमेश्वरि ! ऊपर कहे हुए साधन में प्रातःकाल से आरम्भ करके दुपहर तक एक नियम से जप करे और प्रति दिन एक २ ब्राह्मण को भोजन करावै ॥ ५ ॥

पूजांकृत्वासाधकेन्द्रःपुनर्जपनमाचरेत् ।
सायंसन्ध्यांततःकृत्वाभोजनंस्वेच्छयानयेत् ॥६॥

साधक को चाहिये कि मध्याह्न के समय में जप को रोककर अभीष्ट देवता की अर्चना करे और अर्चना के अन्त में फिर जप का आरम्भ करे । अनन्तर सन्ध्या समय के आने पर सायंकाल के संध्या वन्दनादि कार्य समाप्त करके अपनी इच्छानुसार भोजन करे ॥ ६ ॥

भक्ष्यंस्तांबूलमत्स्यांश्चभक्षद्रव्याण्यथारुचि ।
भुञ्जानोवाहविष्यान्नंशाकंयावकमेववा ॥ ७ ॥

साधकको चाहिये कि इस प्रकार से इस साधन में रुचि के अनुसार ताम्बूल, मत्स्यादि भक्ष्य पदार्थ भोजन करे अथवा, खीर, शाक, वा यावक भोजन करके जप करे ॥ ७ ॥

एवंकृत्वासाधकेन्द्रोरात्रौजपनमाचरेत् ।
गतेतुप्रथमेयामेतृतीयप्रहरावधि ॥ ८ ॥
स्ववामेशक्तिंसंस्थाप्यजपेन्मंत्रमनन्यधीः ।
शक्तियुक्तोभवेन्मर्त्यः सिद्धोभवतिनान्यथा ॥ ९॥

इस प्रकार से भोजन कार्य को समाप्त करके रात्रि के समय का जप आरंभ करे, रात्रि का प्रथम पहर वीतने पर अपने बांयें भाग में शक्ति को स्थापन करके एकाग्र चित्त से तीसरे पहर तक जप करे ॥ साधक मनुष्य शक्ति युक्त साधन करने से निश्चय ही सिद्धिको प्राप्त कर सकताहै,इस में अन्यथा नहीं हो सकता॥८॥९॥

कुलशक्तिंविनादेवियोजपेत्सतुपामरः ।
सिद्धिर्नजायतेतस्यकल्पकोटिशतैरपि॥ १० ॥

हे देवि ! कुलशक्ति रहित होकर जप करनेवाला साधक पामर होता है, सौ करोड कल्पतक जप करने से भी उसको सिद्धि नहीं होसकती ॥ १० ॥

अयनेविषुवेचैवपूजयेद्विभवावधि ।
कुमारींपूजयित्वातुभोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ११ ॥

उत्तरायण, दक्षिणायन और विषुव संक्रमण के दिन अपने विभव के अनुसार देवीजी की पूजा करे, अनंतर अपनी शक्ति के अनुसार कुमारी पूजा करके उनको विधिपूर्वक भोजन करावै॥११॥

शतमष्टोत्तरञ्चैवब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ।
शक्तिपूजांततःकृत्वाभोजयेच्चयथाविधि ॥ १२ ॥

अनन्तर एक सौ आठ ब्राह्मणों को भोजन कराय विधि सहित शक्ति की पूजा करनी चाहिये और भोजनादि द्वारा उन शक्तियों को सन्तुष्ट करना उचितहै ॥ १२ ॥

गुरवेदक्षिणांदद्यात्स्वर्णवस्त्रसमन्वितम् ।
यद्यदिष्टतमंलोकेगुरवेतन्निवेदयेत् ॥ १३ ॥

इसके उपरांत गुरुको सुवर्ण और वस्त्र युक्त दक्षिणा देवै, इस लोक में जो जो पदार्थ साधक को अभीष्ट हों, वह समस्त ही गुरु-जीको निवेदन करने चाहिये ॥ १३ ॥

गुरुसन्तोषमात्रेणकिन्नसिध्यतिभूतले ।
गुरुरेवपरंब्रह्मनास्तितत्त्वंगुरोःपरम् ॥ १४ ॥

गुरु के संतुष्ट होनेपर इस पृथ्वी में क्या सिद्ध नहीं हो सकता है ? कारण कि गुरुही परब्रह्म स्वरूपहै, और गुरुसे अधिक और परम तत्त्व कुछ भी नहीं है ॥ १४ ॥

एवंकृतेमन्त्रसिद्धिर्भवत्येवनसंशयः ।
सर्वसिद्धीश्वरोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ।
सधन्यःसचविज्ञानीशिवतुल्योनसंशयः ॥ १५ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
तृतीयः पटलः समाप्तः ॥ ३ ॥

इस प्रकार साधन करने पर निस्सन्देह मंत्र सिद्ध होजाताहै और वह साधक सर्व प्रकार की सिद्धियों का स्वामी होकर भैरव की समान विचरण करताहै। इसमें सन्देह नहीं कि जो मनुष्य इस प्रकार से साधन करताहै वही धन्यहै वही ज्ञानीहै और वही साक्षात् शिव स्वरूप होसकताहै ॥ १५ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां तृतीयः
पटलः समाप्तः ॥ ३ ॥

चतुर्थः पटलः ४.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेव संसारार्णवतारक ।
अतिशीघ्रं फलंदेव केनोपायेनलभ्यते ॥ १ ॥

श्रीपार्वती जी बोलीं कि हे देवदेव महादेव ! तुम मनुष्यों को संसाररूपी सागर से उद्धार करते हो हे देव ! इस समय कौन

से उपाय के करने से मनुष्य शीघ्र सिद्धिको प्राप्त कर सकताहै वह आप कहिये ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ।

श्रृणुपार्वतिवक्ष्यामि अतिगुप्ततरंमहत् ।
प्रकाशात्सिद्धिहानिःस्यात्तस्माद्यत्नेनगोपयेत् २

शिवजी बोले कि हे पार्वति ! मैं तुमसे अत्यन्त ही गुप्त साधन का उपाय कहता हूं सुनो इस साधन को प्रगट करने से सिद्ध कार्य में बिघ्न उत्पन्न होंगे इस कारण इसको बडे यत्न के साथ छिपाकर रखना चाहिये ॥ २ ॥

स्वशक्तिंपरशक्तिंवा दीक्षितांयौवनान्विताम् ।
विदग्धांशोभनांशय्यां घृणालज्जाविवर्जिताम्॥३॥
तामानीयसाधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकंशुभम् ।
पञ्चाचारेणतांशक्तिं पूजयित्वायथाविधि ॥ ४ ॥
शतंशीर्षेशतंभाले शतंसिन्दूरमण्डले ।
शतंमुखेशतंकण्ठे शतंहृदयमण्डले ॥ ५ ॥
शतयुग्मंस्तनद्वन्द्वे शतंनाभौजपेत्सुधीः ।
योनिपीठेशतंजप्त्वा साधकःस्थिरमानसः ॥ ६ ॥

अपनी शक्तिहो अथवा पराई शक्तिहो, दीक्षा लीहुई नवीन यौवन वाली अनेक गुणों से युक्त अत्यन्त ही सुन्दर, घृणा और

लज्जा को छोडे हुए ऐसी शक्ति को अपनी शय्या के ऊपर बैठाल कर विविध प्रकारसे पाद्य उपहारादि देकर उसकी पूजा करै। इस प्रकार पंचाचार के क्रमसे उस शक्ति को यथाविधि पूजन कर मस्तक में सौबार, कपाल, में सौबार, मांग में सौबार मुख में सौबार कंठमें सौबार हृदय में सौबार, दोनों स्तनोंमें सौबार नाभिमें सौबार इष्ट मंत्रका जपकरना चाहिये इसके उपरान्त साधक एकाग्र चित्त होकर उस शक्तिकी योनिपीठ में सौबार इष्ट मंत्रका जप करै ॥ ३–६ ॥

एवंसहस्रं संजप्य देवींतत्रविचिन्तयेत् ।
स्वयंशिवस्वरूपश्च चिन्तयेत्साधकोत्तमः ॥ ७ ॥

साधक इस प्रकार से उस शक्ति की देह में सहस्र बार जप करके उसको अनेक इष्ट देवका स्वरूप जानें और फिर अपने को भी साक्षात् शिव माने ॥ ७ ॥

शिवमंत्रेणदेवेशि स्वलिङ्गंपूजयेदथ ।
ताम्बूलंतन्मुखेदत्त्वा साधकोहृष्टमानसः ॥ ८ ॥
तदनुज्ञांसमादाय योनौलिङ्गंविनिक्षिपेत् ।
धर्म्माधर्म्महविर्दीप्ते आत्माग्नौमनसास्रुचा ।
सुषुम्णावर्त्मनानित्यमक्षवृत्तीर्ज्जुहोम्यहम् ॥ ९ ॥

इसके पीछे अपने मुखमें और उस शक्ति के मुखमें ताम्बूलदे, फिर शक्ति की आज्ञा को लेकर मूल ग्रन्थ में लिखी हुई बिधिका आश्रय ले साधन करे ॥ ८ ॥ ९ ॥

स्वाहेत्यनेनमन्त्रेण हुनेत्सर्वसमृद्धये ।
ततोजपेत्सहस्रं वै शक्तियुक्तोभवेन्नरः ॥ १० ॥
शतंवापिप्रजप्तव्यं ततोन्यूनंनकारयेत् ।
पूर्णाहुतिंततोदद्यान्मन्त्रेणानेनसाधकः ॥ ११ ॥
प्रकाशाकाशमन्त्राभ्यामवलम्ब्योन्मनीश्रुचा ।
धर्म्माधर्म्मकलास्नेहपूर्णमग्नौजुहोम्यहम् ॥ १२ ॥
स्वाहेत्यनेनमन्त्रेण पूर्णाहुतिं समाचरेत् ।
शुक्रोत्साधनकालेच देव्यैशुक्रंसमर्पयेत् ॥ १३ ॥

पीछे "धर्माधर्म हविर्दीप्ते" इत्यादि मंत्र के अंत में स्वाहा शब्द का प्रयोग कर होम करना चाहिये इस प्रकार होम करने से साधक सब प्रकार की सिद्धि को प्राप्त कर सकता है फिर शक्ति युक्त होकर सहस्र अथवा सौबार इष्ट मंत्र का जप करै जिसमें सौ से कम नही ऐसा करै। इसके उपरान्त मूलमें लिखे हुए "प्रकाशा-काश मंत्राभ्यां" इत्यादि मंत्र के अंत में स्वाहा शब्द लगाकर पूर्णाहुति दे और ** के समय महादेवी को वह ** प्रदान करे ॥ १०–१३ ॥

एवंकृतेमन्त्रसिद्धिर्नात्रकार्याविचारणा ।
यंयंप्रार्थयतेकामं तन्तंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ १४ ॥

जो साधक इस प्रकार से साधन करते हैं उनको निश्चयही मंत्र सिद्धि होजाती है इसके विपरीत न करना प्रथम कहे हुए साधन के करने से साधक जिस २ मनोरथ की इच्छा करैगा वह निश्चय ही उन्हीं २ द्रव्यों को पा सकैगा ॥ १३ ॥ १४ ॥

रोगीरोगात्प्रमुच्येत धनेनचधनाधिपः ।
वायुतुल्यबलोलोके दुर्जयःशत्रुमर्द्दनः ॥ १५ ॥

रोगी को रोग का नाश करने की इच्छा से जो प्रथम कहे हुएके अनुसार जो इच्छा करे साधन करै वह उसी समय उससे मुक्त होजायगा, धनकी इच्छा करनेवाला पुरुष कुवेर की समान धनवान होजायगा और बलकी इच्छा करनेवाला इसके साधन करनें से पवन की समान बलवान होगा, उसको कोई भी परास्त नहीं कर सकेगा और वह पुरुष शत्रुओंका विनाश करनेवाला होगा ॥ १५ ॥

कामतुल्यश्चनारीणां रिपूणांशमनोपमः ।
एतत्कल्पेनदेवेशि किंनासिध्यतिभूतले ।
अष्टैश्वर्य्यमवाप्नोति सएवश्रीसदाशिवः ॥ १६ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसम्बादे चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

स्त्रियोंमें अनुराग होने की इच्छा से प्रथम कहेहुए के अनुसार जो साधन करैगा तो उसको स्त्रियें कामदेव की समान देखैंगी शत्रु के मारने की इच्छा से जो इस का साधन करैगा शत्रुगण उसको यमराज की समान देखैंगे, हे देवेशि ! प्रथम कही हुई विधिके अनुसार साधन करै तब इस पृथ्वी में साधक को कुछ भी असिद्ध नहीं रहेगा अर्थात् सभीको सिद्ध कर सकैगा अणिमादि आठों सिद्धियें साधक को स्वयं प्राप्त होजांयगी और वह साधक साक्षात् सदा शिवकी समान होजायगा ॥ १६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

पंचमः पटलः ५.

श्रीपार्वत्युवाच ।

हे ईश्वरजगत्तात ममप्राणेश्वरप्रभो ।
इदानींश्रोतुमिच्छामि मासाधिकपुरस्क्रियाम्॥१॥

पार्वती जी बोलीं हे ईश्वर ! तुम समस्त संसार के पिता प्राणेश्वर और सबके प्रभु हो, मैं इस समय मासाधिक की पुरष्क्रिया के सुनने की इच्छा करतीहूं अर्थात् वर्ष के प्रथम महीने के प्रारंभ से लेकर दूसरे महीने तक किस प्रकार से जपकी संख्या बढाकर साल भर तक करनी होतीहै वही आप मुझसे कहिये ॥ १ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

एकमासेतुषड्लक्षं द्विमासेरविलक्षकम् ।
मासत्रयेतुदेवेशि रन्ध्रयुग्मकलक्षकम् ॥ २ ॥
चतुर्मासेमहेशानि चतुर्विंशातिलक्षकम् ।
पञ्चमासेमहेशानि त्रिंशल्लक्षंसदाजपेत् ॥ ३ ॥
षण्मासेप्रजपेन्मन्त्रं षट्त्रिंशल्लक्षकंसदा ।
सप्तमासेमहेशानि द्विचतुर्लक्षकंसुधीः ॥ ४ ॥
अष्टमासेसुरेशानि गजवेदञ्चलक्षकम् ।
मासेतुनवमेदेवि वेदबाणञ्चलक्षकम् ॥ ५ ॥
दशमासेतुसम्प्राप्ते षष्टिलक्षञ्चसञ्जपेत् ।
मासेचैकादशेप्राप्ते लक्षंकालरसञ्जपेत् ॥ ६ ॥

शिवजी बोले कि हे पार्वति ! वर्षके पहले महीने में छै लाखबार इष्ट मंत्र का जप करना होताहै, और दूसरे महीने में बारह लाख तीसरे महीनें में अठारह लाख चौथे महीने में चौबीस लाख पांचवें महीनेंमें तीस लाख छठे महीने में छत्तीस लाख सातवें महीने में बयालीस लाख आठवें में अडतालीस लाख, नवें महीने में साठ लाख दसवें महीने में छासठ लाख ग्यारवें में नब्बे लाख बारवें महीने में सौ लाख जप करना चाहिये ॥ २–६ ॥

वर्षेपूर्णेमहेशानि शतलक्षंजपेत्सुधीः ।
अनेनैवविधानेन योजपेद्भुविमानवः ।
केवलंजपमात्रेण मन्त्राःसिद्धाभवन्तिहि ॥ ७ ॥

इस प्रकार नियम के अनुसार पृथ्वी में जो मनुष्य वर्षभर तक जप करताहै उसको केवल जपही से मंत्र सिद्ध होजाताहै ॥ ७ ॥

पञ्चाचारेणदेवेशि सर्वकार्यंजपादिकम् ।
पूर्ववच्छक्तिपूजाञ्च कुमारींचैवपूजयेत् ॥ ८ ॥

हे देवेशि ! पंचोपचार के क्रमसे प्रथम कहेहुए अनुसार जपादि करै और प्रथम के अनुसार शक्ति की पूजा और कुमारी की पूजा करनी होतीहै ॥ ८ ॥

यथाशक्तिब्राह्मणञ्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ।
तथातेनप्रकारेण शक्तिभोजनमाचरेत् ॥ ९ ॥

इसके उपरांत साधक विधिपूर्वक अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण भोजन और अपनी शक्ति को भोजन करावै ॥ ९ ॥

शक्तिंविनामहेशानिसदाहंशिवरूपकः ।
शक्तियुक्तोयदादेविशिवोऽहंसर्वकामदः ॥ १० ॥

हे महेशानि ! विनाशक्ति के मैंभी तो शव की समान हूं और जिस समय मैं शक्ति युक्त होजाता हूं तभी साधक को संपूर्ण मनोरथ के फल का देनेवाला सदाशिव कहलाता हूं ॥ १० ॥

शक्तियुक्तंजपेन्मन्त्रंनमन्त्रंकेवलञ्जपेत् ।
सावित्रीसहितोब्रह्मासिद्धिश्चनगनन्दिनि ॥ ११ ॥

इस कारण शक्ति युक्त होकर मंत्रका जपकरना चाहिये साधक को विना शक्ति के जप करने से उसका कोई कार्य भी सिद्ध नहीं होता । हे पर्वतनंदिनि ! ब्रह्माजीने भी सावित्री की सहायता से सिद्धि लाभ कीहै ॥ ११ ॥

द्वारावत्यांकृष्णदेवः सिद्धोऽभूत्सत्ययासह ।
यथागोपवधूसङ्गान्ममसिद्धिर्वरानने ॥ १२ ॥
सशिवोऽहंमहादेविकेवलंशक्तियोगतः ।
तदैवपरमेशानिममवाक्यंवृथाभवेत् ॥ १३ ॥

श्रीकृष्णने द्वारकाजी में सत्यभामा की सहायता से सिद्धि को प्राप्त किया था हे सुन्दरी श्रीकृष्णने जिसप्रकार गोपिकाओंके साथमें सिद्धि प्राप्त करी है हमारी सिद्धिको भी उसी प्रकार शक्तिके संयोगसे जानो। हे महेश्वरि शक्ति के संयोगसे ही मैं सदाशिव कहलाताहूं हे देवेशि ! यदि शक्तिके संयोगसे भी साधकको सिद्धि प्राप्त नहो तो मेरे वचनोंको वृथा जानो ॥ १२ ॥ १३ ॥

गङ्गाकाशीप्रयागादिः पुष्करन्नैमिषन्तथा ।
बदरीचतथारेवाउत्कलङ्कुण्डकीतथा ॥ १४ ॥
सिन्धुःसरस्वतीचैवपीठानिविविधानिच ।
सर्वंत्यक्त्वामहेशानिस्त्रीसङ्गंयत्नतश्चरेत् ॥ १५ ॥

हेमहेश्वरि गंगा काशी प्रयागादि पुष्कर नैमिषारण्य बदरिकाश्रम रेवा उत्कल गंडकी सिंधु सरस्वती इत्यादि बहुत सारे पीठस्थान विद्यमानहैं, सिद्धिकी इच्छा करनेवाले साधक इन सब पीठस्थानों को छोडकर बडे यत्न के साथ स्त्रीका संग करैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

स्त्रीसङ्गेसिद्धिमाप्नोतिममवाक्यंनचान्यथा ।
यद्दत्तञ्जलगण्डूषंशक्तिवक्त्रेसुरेश्वरि ॥ १६ ॥
सिन्धुरूपम्परेशानितज्जलंनात्रसंशयः ।
अन्नन्तुशैलतनयेस्थलाचलसमम्भवेत् ॥ १७ ॥

हे सुरेश्वरि स्त्रीके साथही में साधकको सिद्धि प्राप्त होसकतीहै, मेरा यह वचन कदापि व्यर्थ न हो जाता, शक्तिके मुख में यदि एक गंडूष की बराबर जल दिया जाय तो वहभी समुद्र की समान होजाता है इसमें कुछभी संदेह नहीं अर्थात् शक्ति को एक गंडूष की समान जल देनेमें समुद्र के जलदान करने की समान फल होता है, और शक्ति को अन्नदान करने से अन्नके पर्वत की समान फल प्राप्त होता है ॥ १६ ॥ १७ ॥

एवंसंख्यातुसर्वत्रज्ञातव्याकुलसाधकैः ।
सदेष्टदेवीभावेतुभोजयेत्ताञ्चयत्नतः ॥ १८ ॥

इस प्रकार शक्ति को जो जो वस्तुदीजाती हैं उससे उसको ऊपर कहे हुए के अनुसार अनंत फल प्राप्त होताहै, इस कारण कुलवान्

साधक सर्वदा शक्ति को अभीष्ट देवता जानकर उसको यत्न से भोजन करावै ॥ १८ ॥

क्रोधान्मोहाच्छलाद्वापियदिपूजांनकारयेत् ।
कल्पकोटिशतेनापितस्यसिद्धिर्नजायते ॥ १९ ॥

यदि क्रोध के बश होकर मोह से अथवा छलयुक्त कोई साधक शक्तिकी पूजा न करे तो सौकरोड कल्प जप करने से भी उसको सिद्धि प्राप्त नहीं होसकती ॥ १९ ॥

एतात्सिद्धितमंदेवितवस्नेहात्प्रकाशितम् ॥
नवक्तव्यंपशोरग्रेशपथोमेत्वयिप्रिये ॥ २० ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
पञ्चमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से यह सिद्धि होनेका विधान प्रकाश किया है इसको कभी भी पशु के समान आचार करनेवाले दुष्ट मनुष्योंके निकट प्रगट न करना हे प्रिये ! कभी भी तुम इस सिद्धिको जो पशुकी समान आचार करनेवाले कपटी पुरुष हैं उनके समीप कहोगी तौ तुमको मेरी शपथ लगैगी ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेपार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
पंचमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

षष्ठः पटलः ६.

श्रीदेव्युवाच ।

शिवशङ्करईशानब्रूहिमेपरमेश्वर ।
दक्षिणायाःप्रकारन्तुसूचितन्नप्रकाशितम् ॥ १ ॥

देवी बोली-कि, हे शिव ! हे शङ्कर ! हे ईशान ! हे परमेश्वर ! इस समय दक्षिण कालिका के आराधनाकी विधि मेरे प्रति कहिये इससे पहले आपने उक्त पूजा की सूचना दी है, इस समय वहीं दक्षिण कालिका की पूजा विधि आप प्रकाश करिये ॥ १ ॥

इदानींश्रोतुमिच्छामियदितेऽस्तिकृपामयि ।
दक्षिणासिद्धिदासिद्धात्रैलोक्येषुसुदुर्ल्लभा ॥ २ ॥

हे नाथ ! यदि जो मेरे ऊपर आपका स्नेह और अनुराग हुआ है तो किस प्रकार दक्षिण कालिका में सिद्ध प्राप्त कर सकते हैं, वह आप मेरे निकट प्रकाशित करिये। इस आराधना के सुनने की मेरी बडी इच्छा है, यह त्रिलौकी में भी दुर्लभहै ॥ २ ॥

यामाराध्यमहादेवसृष्टिकर्त्ताप्रजापतिः ।
यामाराध्यमहाविष्णुःपालयत्यखिलञ्जगत् ॥ ३ ॥
संहारकालेचहरोरुद्रमूर्त्तिधरःपरः ।
तांविद्यांवदईशानयद्यहन्तवबल्लभा ॥ ४ ॥

हे महादेव ! इस दक्षिण कालिका की पूजा करनेसे ही प्रजापति ब्रह्माजी सृष्टि के कर्त्ता हुएहैं, जिसकी आराधना के बल महाविष्णु जी अनन्त ब्रह्मांड का पालन करते हैं, और जिसके जप करने से रुद्र मूर्तिधारी हर, संहार के समय समस्त प्रजा का विध्वंस करते हैं, हे ईशान ! यदि मेरे ऊपर आपका प्रेम है तो वह महाविद्या आप मेरे निकट कहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

दक्षिणायाःप्रकारन्तुकालीतन्त्रादियामले।
अतःपरम्महेशानिविरताभवसुन्दरि॥ ५ ॥

शिवजी बोले कि हे देवि ! काली तंत्र और यामल तन्त्र में ऊपर कहीहुई वह महाविद्या प्रकाशित है इस कारण से मैं उसके फिर प्रकाशित करने की इच्छा नहीं करताहूं, हे सुंदरि ! अब तुम अपनी अभिलाषा को छोड दो ॥ ५ ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

एतत्प्रकारन्देवेशयदिमेनप्रकाशितम्।
प्राणत्यागङ्करिष्यामिपुरतस्तेनसंशयः॥ ६ ॥

फिर पार्वतीजी बोलीं कि हे नाथ ! जो आप मेरे निकट उस महाविद्या को नहीं कहेंगे तो मैं निश्चयही तुम्हारे सामने अपने प्राणों को त्याग दूंगी ॥ ६ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिदक्षिणाकल्पमुत्तमम् ।
यस्याःप्रसङ्गमात्रेणभवाब्धौननिमज्जति ॥ ७ ॥

शिव जी बोले कि हे देवि! मैं तुमसे दक्षिण कालिका का कल्प कहताहूं, तुम सावधान होकर सुनो, इस दक्षिण देवी के प्रसङ्ग मात्र से ही मनुष्य को भवसागरमें डूबना नहीं होताहै ॥ ७ ॥

स्वरान्तंवह्निसंयुक्तंवामनेत्रविभूषितम् ।
बिन्दुनादकलायुक्तं मन्त्रन्त्रैलोक्यमोहनम् ॥ ८॥

ककार, रेफ, ईकार और नाद बिंदु अर्थात् क, र, ई, एवं चन्द्रबिन्दु इन समस्त वर्णों के संयोगसे "क्रीं" यह बीज बनता है, फिर यही दक्षिण कालिका का मन्त्रहै इसी मन्त्रके प्रयोगसे मनुष्य त्रिलोकी को मोहित करसकताहै ॥ ८ ॥

भैरवोऽस्यऋषिःप्रोक्त उष्णिक्छन्दउदाहृतम् ।
दक्षिणाकालिकाप्रोक्तादेवतासर्वसिद्धिदा ॥ ९ ॥
मायाबीजंबीजमस्याःकूर्चबीजन्तुशक्तिकम् ।
निजबीजम्महेशानिकीलकंसर्वमोहनम् ॥ १० ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ।
कालीतन्त्रादितन्त्रेषुपूजायागादिपार्वति ॥
लिखितञ्चमयापूर्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ११॥

इसी मन्त्रसे ऋषि भैरव, छन्द उष्णिक और दक्षिण कालिका यह सब प्रकार की सिद्धि को देहै "ह्रां" यह बीजही इस मन्त्र का बीज है "हुं" यह बीज इसकी शक्ति है "क्रीं" यह इस विद्या का कीलकहै ऊपर कहीहुई विद्या सभी को मोहित करतीहै अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, इसकी प्राप्ति के विषय में इसका विनियोग होताहै अर्थात् इस ऊपर कही हुई विद्या की आराधना से साधक धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त करसकता है, हे पार्वति ! मैंने काली तन्त्र में इस विद्या की पूजा की रीति और जप होम की विधि पहलेही कहीहै, हे देवि ! अब और तुम्हारे सुननेकी क्या इच्छाहै सो कहिये ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

ध्यानानुरूपिणीमूर्त्तिर्यदिपूजादिकंचरेत् ॥
अचारकीदृशस्तत्र कोवातत्रप्रपूजयेत् ॥ १२ ॥

फिर देवी जी बोली, कि यदि ध्यान के अनुसार मूर्त्ति की कल्पना कर पूजा करनी हो; तो किस प्रकार आचार से पूजा की जाय और कौनसा मनुष्य उस पूजा के करने का अधिकारीहै ॥ १२ ॥

भूतशुद्धौमहादेवयदिदेहन्तुनाशयेत् ।
कुत्रस्थलेभवेद्दृष्टिरमृतंकुत्रसञ्चरेत् ॥ १३ ॥

हे महादेव ! यदि भूत शुद्धि करने से देह का नाश होजाय तो कौनसा स्थान दृष्टि होगा, और कौन से स्थान में अमृत का संचरण करै ॥ १३ ॥

आलीढङ्कीदृशन्नाथप्रत्यालीढन्तुकीदृशम् ।
कथंवाकालिकादेवीश्मशानालयवासिनी ॥ १४ ॥
निशावाकीदृशीनाथकीदृशीवामहानिशा ।
भावभेदंमहादेवतद्वदस्वदयानिधे ॥ १५ ॥

हे नाथ! तुमने पहले आलीढ और प्रत्यालीढ चरणों का उल्लेख कियाहै, सो आप मुझसे यह भली प्रकारसे कहिये कि किस प्रकारसे आलीढ हुआ और कैसे उसको प्रत्यालीढ कहागया, फिर किस कारण से वह कालिका देवी श्मशान वासिनी हुई हैं निशा और महानिशा किसको कहते हैं हे महादेव तुम मेरे ऊपर दया करके जो प्रश्न मैंने आपसे पूछेहैं उनका उत्तर यथावत् दो १४।१५

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि ।
तत्तत्सर्वंप्रवक्ष्यामिसावधानावधारय ॥ १६ ॥

शिवजी बोले कि हे देवि! तुमने मुझसे जो कुछ पूछाहै मैं उन सभी प्रश्नों का उत्तर तुमको भली प्रकार से दूंगा, तुम सावधान होकर सुनो ॥ १६ ॥

पूजायाःपूर्वदिवसेआदौक्षौरादिकञ्चरेत् ।
हविष्यान्नम्भोजनञ्चअथवापिनिरामिषम् ॥ १७ ॥

जिस दिन देवी की पूजा करनी हो उसके पहलेदिन साधक हजामत इत्यादि कर्मों से निश्चिन्त हो खीर और विना मांस का

भोजन करै अर्थात् उस दिन मांस को न खाय और जितेन्द्रिय होकर रहै, ॥ १७ ॥

ततःपरस्मिन्दिवसेप्रातःस्नात्वातुसाधकः ।
नित्यपूजांसमाप्यादौदेववच्छुद्धमानसः ॥ १८ ॥

इसके उपरान्त दूसरेदिन साधक प्रातःस्नानादि नित्य क्रियाओं से निश्चिन्त होकर नित्य की पूजा को समाप्त करके देवताओं की समान शुद्ध और निर्मल चित्त वाला होजाय ॥ १८ ॥

गुरुर्वागुरुपुत्रोवागुरुपत्नीचसुव्रते ।
आगमोक्तविधानेनअधिकारीगुरुःस्वयम् ॥१९॥

हे अच्छे चरित्रोंवाली ! पूजा के काम में गुरु, गुरु का पुत्र अथवा गुरु की स्त्री यही श्रेष्ठ हैं अधिकतर ऊपर कहेहुए विधानसे स्वयं गुरुही अधिकता से उस कार्य के विधान में गुरुको अधिकारी जानै ॥ १९ ॥

गुरोरभावेदेवेशिस्वयंपूजादिकञ्चरेत् ।
एभिर्विनामहेशानितान्त्रिकैर्दैशिकैर्यदि ॥ २० ॥
तस्यपूजाफलंसर्वंभुज्यतेयक्षराक्षसैः ।
अतएवमहेशानिगुरुःकर्त्ताविधीयते ॥ २१ ॥

हे देवेशि ! गुरु के न होने से साधक अपने आपही पूजादि कार्य को करे, जिनको हम ऊपर पूजा का अधिकारी कह आयेहैं यदि उनमें से तो कोई मनुष्य कर्त्ता हो परन्तु और किसी तन्तु

के जानने वाले मनुष्य से पूजा का कार्य कराया जाय तो उस पूजा का फल यक्ष और राक्षस भक्षण करतेहैं। हे महेशानि ! इस कारण गुरुहीको पूजादि कार्य का कर्त्ता जानें ॥ २० ॥ २१ ॥

ब्रह्मरूपोगुरुःसाक्षाद्यदिपूजादिकंचरेत् ।
तत्तत्सर्वंमहेशानिशतकोटिगुणम्भवेत् ॥ २२ ॥

हे महेश्वरि ! गुरुही स्वयं ब्रह्मस्वरूप हैं यदि वह पूजा इत्यादि कार्यों को करैं, तो वह पूजा सौ करोड गुणा फल की देनेवाली होतीहै ॥ २२ ॥

अथवापरमेशानिस्वयम्पूजादिकञ्चरेत् ।
स्वयम्पूजादिकंकृत्वांपूजाद्रव्यादिकञ्चयत् ॥ २३॥
तत्सर्वंपरमेशानि गुरोरग्रेनिवेदयेत् ।
गुरौदत्तेमहेशानिसर्वङ्कोटिगुणम्भवेत् ॥ २४ ॥

हे परमेश्वरि ! जब गुरु पूजा के समय न होंय, तो साधक अपने आपही पूजा कार्य करै, परन्तु अपने आप पूजा इत्यादि कार्य कर भी ले तो भी जितने पूजा के पदार्थ हों उन सभी को गुरुदेव के निकट रक्खै, गुरु को वह पूजा के द्रव्य अर्पण करै तब वह पूजा सौ करोड गुणा फल की देनेवाली होती है ॥ २३ ॥ २४ ॥

गुरुपत्नीमहेशानियदिपूजादिकञ्चरेत् ।
बलिदानादिकंसर्वतत्रहोमंविवर्जयेत् ॥ २५ ॥

होमीयद्रव्यमानीयदेव्यग्रेस्थापयेद्बुधः ।
मूलमन्त्रंसमुच्चार्यमहादेव्यैनिवेदयेत् ॥
तेनहोमफलञ्ज्ञातन्नचाग्नौहोमयेद्बुधः ॥ २६ ॥

फिर जिस समय गुरु की स्त्री पूजा का कार्य करै उस पूजा में बलिदानादि सम्पूर्णही कार्य करै, केवल होम न करै होम के सम्पूर्ण पदार्थ महादेवी के आगे अर्पण करै ऐसा करनेही से होम के फल की प्राप्ति होगी, अग्नि में आहुति देने की कुछ आवश्यकता नहींहै ॥ २५ ॥ २६ ॥

गुरुंविलंघ्यशास्त्रेस्मिन्नाधिकारीसुरोपिच ।
गुरुणायत्कृतन्देवितत्सर्वमक्षयम्भवेत् ॥ २७ ॥

ऊपर कहे हुए साधन के कार्य में गुरु को उल्लङ्घन करके देवताओं को भी पूजा का अधिकारी नहीं माने, हे देवि ! गुरु जो ही कार्य करैगा वह अक्षय फल का देनेवाला होगा अथवा उसका फल अक्षय होगा ॥ २७ ॥

ऋत्विक्पुत्रादयोदेविस्मृत्युक्ताबहवःप्रिये ।
तन्त्रोक्तंपरमेशानिनान्यद्वक्त्रंविलोकयेत् ॥२८॥

स्मृति इत्यादि शास्त्र में पुरोहित का पुत्र इत्यादि अनेक पूजा के अधिकारियों को लिखाहै, परन्तु हे प्रिये ! तन्त्र के ऊपर कहेहुए कार्य में और किसी दूसरे मनुष्यका मुख तक भी न देखै ॥ २८ ॥

इष्टपूजादिकंसर्वंयःकुर्याज्जनसन्निधौ ।
तस्यसर्वार्थहानिःस्यात्क्रुद्धाभवतिचण्डिका २९॥
वरम्पूजानकर्त्तव्यानकुर्य्याज्जनसन्निधौ ।
अन्यसन्निहितेदेवियदिपूजापरोभवेत् ॥ ३० ॥
विष्णुतन्त्रोक्तपूजादितत्तन्मुद्रांप्रदर्शयेत् ।
तेनपूजादिकञ्ज्ञातन्नचव्यक्तङ्कदाचन ॥ ३१ ॥
वामकुक्षौस्थितपापम्पुरुषङ्कज्जलप्रभम् ।
तस्यसंहारणार्थायमहतीप्रकृतीकृता ॥ ३२ ॥

जो साधक और किसी दूसरे मनुष्यों के सामने तन्त्र में कही-हुई पूजा को करता है तब उस कार्यमें संपूर्ण हानि होजाती है, और भगवती चण्डिका देवी क्रोधित होतीहैं, वरन तन्त्र में कहीहुई पूजा के कार्य को न करना चाहिये, तथापि मनुष्योंके सामने पूजा करना कर्त्तव्य नहीं, हे देवि ! यदि कभी भी किसी और मनुष्य के सामने कीजाय तो ऐसा करने से विष्णु तन्त्र में कहीहुई मुद्रा इत्यादिकों का दिखाना होताहै, ऐसा करनेसे पूजा के व्यक्ति होने की संभावना नहीं होगी, । अर्थात् तंत्र के समस्त कार्यों को छिपा कर रक्खै, जिस्में वह प्रगट न होसकै, वही करना चाहिए॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

लिङ्गदेहोमहेशानितस्यदेहोनसंशयः ।
पापदेहम्भवेद्दग्धंस्वदेहन्नैवनाशयेत् ॥ ३३ ॥

उदर के बांये भाग में काजर की समान जो पाप पुरुष की देह विद्यमानहै इस देह को जलाने की जो रीतिहै यह लिंग देह अर्थात् स्थूल शरीरही उस पाप पुरुष की देहहै, इसी को पाप देह कहतेहैं इसेही जलावैं, यथार्थ देह का नाश न करै पहली देह का नाश न करै, भूत शुद्धि के समय उस पापमय स्थूल शरीर को ही दग्ध किया जाताहै ॥ ३३ ॥

आलीढम्वामपादन्तुप्रत्यालीढन्तुदक्षिणम् ।
संहाररूपिणीकालीजगन्मोहनकारिणी ॥ ३४ ॥

बांये चरण को आलीढ और दांये चरण को प्रत्यालीढ कहा है, यह संसाररूपिणी कालीही इस अनन्त संसार को मोहित करतीहै ॥ ३४ ॥

वह्निरूपामहामायासत्यंसत्यन्नसंशयः ।
अतएवमहेशानिश्मशानालयवासिनि ॥ ३५ ॥

इन महामाया का अग्निस्वरूपहै, हे देवि ! तुम मेरे वचन को सत्यहीसत्य जानो, इसमें किसी प्रकारका भी संशय न करना, हे महेशानि ! वह महामाया अग्निस्वरूप कही जाकर श्मशानमें वास करतीहै ॥ ३५ ॥

आलीढपादासादेवीप्रत्यालीढाक्षणेक्षणे ।
अनन्तरूपिणींश्यामांकोवक्तुंशक्यतेप्रिये ॥ ३६॥

अनन्तरूपिणीश्यामाचतुर्वर्गफलप्रदा ।
गुरुणायस्ययत्प्रोक्तन्तत्तस्यब्रह्मसंहितम् ॥ ३७॥

दक्षिण कालिकादेवी सर्वदाही आलीढ चरणवाली हैं और यह क्षण २ में प्रत्यालीढ चरणकी हैं, अर्थात् सर्वकाल बांए चरणहीसे घूमा करतीहैं, इनके अनन्त रूपहैं । हे प्रिये ! यह किस समय कौनसा स्वरूप धारण करतीहैं यह निश्चय नहीं होसकता इसी कारण से इनके स्वरूप का निर्णय नहीं होसकताहै । श्यामा अनन्त रूपवालीहैं, इनके स्वरूप का भी निर्णय नहीं होसकताहै, यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थोंको देतीहैं । इनश्यामा के विषय में गुरुजी जो कुछ भी कहैं उसके बीच में गुरु का वह उपदेशही ब्रह्म संहिता की समानहै इस कारण साधक गुरुके उपदेश के अनुसार श्यामा की आराधना करने से निश्चयही सिद्धि को प्राप्त करसकैगा ॥ ३६॥३७ ॥

निशातुपरमेशानिसूर्येचास्तमुपागते ।
प्रहरेचगतेरात्रौघटिकेद्वेपरेचये ॥ ३८ ॥
महानिशामहाख्याताततश्चातिमहानिशा ।
अर्द्धरात्रेगतेदेविपशुभावेनपूजयेत् ॥ ३९ ॥

हे परमेश्वरि ! सूर्यदेव के अस्त होतेही निशा कही जातीहै, रात्रि के एक पहर बीत जानेपर फिर दो घड़ी रात रहनेपर महानिशा कही जातीहै और इसके पीछे भी महानिशा होतीहै, रात्रिका पहला पहर बीतनेपर पशुभावसे देवीकी पूजा करनी चाहिये ३८।३९

दशदण्डेतुयापूजातत्सर्वमक्षयम्भवेत् ।
षष्ठक्रोशेमहेशानितत्सर्वममृतोपमम् ॥ ४० ॥

दस घड़ीके समयमें यह पूजा कीजातीहै उस साधकको अक्षय फलकी प्राप्ति होतीहै छैः क्रोश अर्थात् बारह घड़ीके समयमें पूजा करके जो कुछ भी देवताके अर्पण किया जाताहै वही अमृतकी समान होजाताहै । देवताको अमृत देनेसे जिस प्रकारका फल होताहै उसी प्रकारसे इस पूजाका फल होताहै ॥ ४० ॥

सप्तमक्रोशकेदेविसर्वंक्षीरोपमम्भवेत् ।
अष्टमक्रोशकेदेविद्रव्यतुल्यन्नसंशयः ॥ ४१ ॥

सातवें क्रोश अर्थात् चौदह घड़ी रात्रिमें पूजा करके जिन संपूर्ण पदार्थोंको अर्पण कियाजाता है तो जिस प्रकार से क्षीरसागरको दूधके अर्पण करनेसे देवताओं की तृप्ति होतीहै उसी प्रकार उस पूजा से भी तृप्ति होतीहै अष्टम क्रोशमें अर्थात् सोलह घड़ी रात्रि के समय में देवीकी पूजा करके जो कुछ अर्पण किया जाताहै उसको साधारण द्रव्योंकी समान जानें, साधारण प्रदान करने से जिस प्रकार फल होताहै सोलह घडी रात्रिके बीतनेपर देवीकी पूजा करनेसे भी वही फलहोताहै इसमें संदेह नहीं ॥ ४१ ॥

अतःपरम्महेशानिविषतुल्यन्नसंशयः ।
एतत्सर्वंमहेशानिपशुभावेमयोदितम् ॥ ४२ ॥

रात्रिको सोलह घडी बीतजानेपर देवीकी पूजाके लिये जो कुछ द्रव्य दियाजाताहै वह विष की समानहै, देवीको विषके अर्पण करने से जिसप्रकारका फल हो, सोलह घडी बीतजाने पर पूजाके द्रव्य देने से भी वही फल होताहै, हे देवि ! मैंने यह समस्त विधि गुप्त भाव से कहीहै। जो मनुष्य पशुकी समान आचार करने वालेहैं वह लोग इसप्रकारकी बिधिका अवलम्बन करके देवीकी पूजा करैं ४२॥

दीव्यवीरमतेदेवितत्त्वज्ञानेप्रपूजयेत् ।
पञ्चतत्त्वंसमानीय यदिपूजापरोभवेत् ॥ ४३ ॥
कालाकालंमहेशानिविचारन्तत्रवर्जयेत् ।
अर्द्धरात्रेगतेदेविकुलपूजाप्रकीर्त्तिता ॥ ४४ ॥
अतिस्नेहेनदेवेशितवस्थानेप्रकाशितम् ।
पशोरग्रेप्रकाशंवैकदाचिन्नैवकारयेत् ॥ ४५ ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
षष्ठः पटलः समाप्तः ॥ ६ ॥

हे देवि ! जोमनुष्य दिव्य वीरहैं वे तत्त्व ज्ञान से पूजा करैं, यदि साधक पंचतत्त्व को लाकर पूजा करने में तत्पर हों तो हे महेश्वरि ! वह पूजाके समय में कालाकालके विचारको छोडदें। और कौलिकाचारके मतसे आधीरातके बीत जानेपर जो पूजा की जातीहै उसीको कुलपूजा कहतेहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ हे देवि ! तुम्हारे ऊपर मेरा अधिक

स्नेह है, इसीकारण मैंने तुमसे यह तन्त्र कहाहै तुमकभीभी इसको पशुकी समान आचार करनेवाले मनुष्योंके निकट न कहना, इसको सर्वदाही गुप्तभाव से रखना ॥ ४९ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेपार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

सप्तमः पटलः ७.

श्रीदेव्युवाच ।

भूतनाथजगद्वन्द्यजगन्निस्तारकारक ।
त्वांविनासंशयच्छेत्तानहित्राताचकुत्रचित् ॥ १ ॥

फिर श्रीपार्वती जी बोलीं कि, हे भूतनाथ ! तुम जगत्के पूज्य और जगत्को उद्धार करनेवाले हो, तुम मनुष्योंके मनके संशयको दूर करते हो तुम्हारे विना संसारसे उद्धार करनेवाला ऐसा और कोई नहीं है ॥ १ ॥

ब्रूहिमेजगतांनाथतत्त्वंपरमदुर्ल्लभम् ।
येनज्ञानप्रसादेननिर्वाणपदमीयते ॥ २ ॥

हे जगन्नाथ ! तुम मेरे निकट इस अत्यन्त दुर्लभ परम तत्त्वको कहो, जिस तत्त्वज्ञानके बलसे साधक निर्वाण पदको पा सके उसको मैं जाननेकी इच्छा करती हूं ॥ २ ॥

कथ्यतांपरमेशानयदिस्नेहोऽस्तिमांप्रति ।
तवस्नेहान्महादेवपण्डिताहन्नचान्यथा ॥ ३ ॥

हे परमेश्वर ! यदि मेरे ऊपर आपका अधिक प्रेम है तो आप इस परमतत्त्वको मुझसे कहकर मेरी अभिलाषाको पूर्णकरो मैं तुम्हारी कृपा और स्नेहके वशसेही विद्या जाननेमें चतुर हुई हूं, सो इस समय आप मुझसे उस तत्त्वज्ञानको कहिये, इसके विपरीत न करना ॥ ३ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

त्रैलोक्येवातुलःख्यातोवातुलोहंसुरेश्वरि ।
वातुलस्यवचःश्रुत्वाप्रतीतात्वंकथंप्रिये ॥ ४ ॥

देवीके इस बचनको सुनकर शिवजी बोले, हे सुरेश्वरि ! मैं त्रिलोकी में बहुत बोलनेवाला विख्यात हूँ, इस कारण यह तो सत्यही है कि मैं बहुत बोलता हूं, हे प्रिये ! वाचालके बचनोंको सुनकर तुम्हें संतोष नहीं होगा ॥ ४ ॥

त्वमेवपरमन्तत्त्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।
अतःपरंमहेशानिविरताभवसुन्दरि ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम वाचालके निकटसे किस परम तत्त्वके सुननेकी इच्छा करती हो ? इस कारण इस चेष्टाको छोड़दो ॥ ५ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

यदितत्त्वंमहादेवनमेकथयसिप्रभो ।
प्राणत्यागङ्करिष्यामिपुरतस्तेनसंशयः ॥ ६ ॥

फिर जब महादेवजी कहचुके तब फिर देवीजी बोलीं कि, हे महादेव, जो तुम मुझसे उस परम तत्त्वको न कहोगे तो मैं निश्चयही तुम्हारे सामने अपने प्राणोंको त्याग दूंगी ॥ ६ ॥

श्रीशिव उवाच ।

सर्वतन्त्रेषुदेवेशिकथितञ्चमयापुरा ।
व्यक्तरूपेणदेवेशिकथम्पृच्छपुनःपुनः ॥ ७ ॥

तत्त्वज्ञानके विषयमें महादेवजीने पार्वतीजीका जब अत्यन्तही आग्रह देखा तो बोले हे देवेशि ! मैंने प्रथम सभी तन्त्रोंमें उस तत्त्वज्ञानको कहा है, फिर तुम किस कारणसे वार २ प्रगट रूपसे पूछती हो ॥ ७ ॥

तवस्नेहान्महादेविकिंमयानप्रकाशितम् ।
इमांकथांमहादेविव्यक्तरूपेचमावद ॥ ८ ॥

हे महादेवि ! मैंने तुम्हारे स्नेहके वश होकर क्या नहीं कहाहै, हे महादेवि ! यह कथा कभी भी किसीके निकट प्रकाश करके मत कहियो ॥ ८ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

तवैवपुरतःस्थित्वायदुक्तञ्चमयापुरा ।
तद्वाक्यम्परमेशानिकथंमिथ्याभविष्यति ॥ ९ ॥

फिर देवीजी बोलीं हे परमेश्वर ! मैंने प्रथम जो तुम्हारे सामने कहदिया फिर वह अब किस प्रकारसे मिथ्या होसकता है, मैंने

तुम्हारे सामने प्रतिज्ञा की है जो रहस्य छिपाकर रखनेका है उसको कभी भी किसीके सामने नहीं कहा जायगा ॥ ९ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामितत्त्वम्परमदुर्ल्लभम् ।
मन्त्रोद्धारक्रमेणैवतत्सर्वंकथयामिते ॥ १० ॥

इसके उपरांत शिवजी बोले ! हे देवि ! मैं उस अत्यंत दुर्लभ तत्त्वज्ञानको कहता हूं श्रवण करो । मन्त्रोद्धारके क्रमसे तुम्हें समस्त तत्त्वज्ञानका उपदेश करूंगा ॥ १० ॥

भान्तमकारसंयुक्तन्थान्तंवायुयुतंकुरु ।
बिन्दुयुक्तम्पुनर्भान्तमाकारंबिन्दुसंयुतम् ॥ ११ ॥
चन्द्रबीजंसमुच्चार्यअङ्कारंन्तदनन्तरम् ।
पुनर्भान्तन्तकारञ्चचन्द्रवायुयुतंशिरः ॥ १२ ॥
पुनर्भान्तम्महेशानिपञ्चमस्वरसंयुतम् ।
थान्तंवह्निसमारूढमाकारसंयुतंकुरु ॥ १३ ॥
पुनर्भान्तम्महेशानिसूर्य्यस्वरविभूषितम् ।
तान्तमुकारसंयुक्तन्धान्तमाकारसंयुतम् ॥ १४ ॥

भान्त, अर्थात् मकारमें अकार मिलाकर थांत, अर्थात् दकारमें यकार और बिंदुको मिलानेसे "मद्य" यह शब्द होता है । फिर दुबारा "भांत" अर्थात् मकारमें आकार और बिंदुको मिलानेसे

बिंदु संयुक्त अर्थात् चंद्रबीज अर्थात् सकारका उच्चारण करै तब "मांस" यह शब्द होगा, इसके बाद अकारमें मिला हुआ सकार और अस्वर तकारका उच्चारण करनेसे चन्द्रबीज अर्थात् सकार और वायु बीज, अर्थात् यकार इन दोनों वर्णोंको मिलाकर उनमें बिन्दुको मिलावे तब "मत्स्य" यह शब्द होता है, पीछे मकारमें पंचम स्वर, अर्थात् उकारके मिलानेसे "थांत" अर्थात् दकार और वह्नि अर्थात् र मिलाकर फिर इन दोनों वर्णोंमें अकारको लगावे ऐसा करनेसे "मुद्रा" यह शब्द होगा । फिर मकारमें सूर्य स्वर अर्थात् ऐ कारको मिलाकर "तान्त" अर्थात् थकार और उकारको मिलावै, पीछे धान्त, अर्थात् न इस वर्णमें शिर या अं इन वर्णोंको मिलानेसे इससे "मैथुनं" यह शब्द होता है ॥११॥१२॥१३॥१४॥

पञ्चतत्त्वमिदन्देविसर्वतन्त्रेषुगोपितम् ।
यदिविप्रोभवेद्देविपञ्चतत्त्वपरायणः ॥ १५ ॥

हे देवी ! मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन इनकोही पंचतत्त्व अथवा पंचाचार कहतेहैं । यह पंचतत्त्व सब तन्त्रोंसे छिपा है, हे देवि ! भाग्यहीके वशसे कोई ब्राह्मण इस तत्त्वका जाननेवाला होसकता है, और साधारण ब्राह्मण इस तत्त्वको नहीं जान सकता १५

सत्यंसत्यंमहेशानिपरतत्त्वेप्रलीयते ।
यथाजलन्तोयमध्येलीयतेपरमेश्वरि ॥
तथैवतत्त्वसेवायांलीयतेपरमात्मनि ॥ १६ ॥

पंचतत्त्वका जाननेवाला साधक ही इस परम तत्त्वमें लीन होसकता है, हे महेशानि ! मेरे इस वचनको तुम सत्यही सत्य जानो, हे परमेश्वरि!जिस प्रकारसे जलमें जल लय होजाता है, उसी प्रकार पंचतत्त्वके जाननेसे साधक परमात्मामें लय होजाता है ॥ १६ ॥

क्षत्रियः परमेशानिसहयोगेवसेदध्रुवम् ।
वैश्यस्तुलभतेदेविस्वरूपंनात्रसंशयः ॥ १७ ॥

पंचतत्वका जाननेवाला क्षत्री देवीके साथ निवास करताहै, और जो वैश्य पंचतत्त्वका ज्ञाता हो तो वह देवीके स्वरूपमें मिलजाता है इसमें कुछभी संदेह नहीं है ॥ १७ ॥

शूद्रस्तुपरमेशानिसहलोकेसदावसेत् ।
एतदन्योमहेशानियदितत्त्वपरायणः ॥ १८ ॥
सत्यंसत्यम्महेशानिमुक्तिःफलमखण्डितम् ।
सेनानीपरमेशानिदेवीदेहेप्रलीयते ॥ १९ ॥

हे परमेश्वरि ! यदि शूद्र जाति का मनुष्य भी पंचतत्त्व का जानने वाला होजाय तो वह शूद्र देवी के साथ देवीलोक में निवास करता है, हे महेशानि ! यदि इनके अतिरिक्त कोई अन्य मनुष्य पंचतत्त्व का जाननेवाला हो तो उसकी मुक्ति होजाती है मेरे इनवचनों को सत्यही सत्य जानो यह वचन कभी अन्यथा नहीं होंगे, हे देवि ! यदि कोई सेना का पुरुष पंचतत्व का ज्ञाता हो जाय तो वह देवी की देह में लीन होजाता है ॥ १८॥१९ ॥

शोधनञ्चमयाप्रोक्तन्नीलतन्त्रादियामले ।
नकस्मैचित्प्रवक्तव्यम्प्रकाशाच्छिवहाभवेत् २०॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
सप्तमः पटलः समाप्तः ॥ ७ ॥

हे देवि ! मैंने नील तन्त्र व यामल तन्त्र इत्यादि में पांचों तत्त्वों की शुद्धि कही है, इस समय तुम्हारे निकट भी मैंने उसी पंचतत्त्व को कहा है, तुम इसको कभी किसीके प्रति मत कहना, इस पंचतत्त्वके प्रगट करने से शिव के संहार करने का पाप लगेगा ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अष्टमः पटलः ८ः

श्रीशिव उवाच ।

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिसिद्धारिचक्रमुत्तमम् ।
अस्यविज्ञानमात्रेणमन्त्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥
यद्विनापरमेशानिमन्त्रसिद्धिर्भवेन्नहि ॥ १ ॥

शिवजी बोले कि, इसके पीछे सब तन्त्रों में कहा हुआ अब सिद्धारि चक्र कहता हूं. इस चक्र के विना जाने मनुष्य को मन्त्र सिद्धि नहीं होती ॥ १ ॥

चतुरस्रंलिखेत्कोष्ठंयावत्षोडशकोष्ठकम् ।
तावदङ्कान्प्रयत्नेनरचयेत्साधकोत्तमः ॥ २ ॥

पहले पहले चार कोन का चक्र बनावे, फिर उस में साधक यत्न के साथ सोलह खाने बनावे ऐसा करनेसे एक चक्र बन जायगा ॥ २ ॥

तत्रवर्णान्लिखेन्मन्त्रीप्रकारश्रृणुसादरम् ।
इन्द्वग्निरुद्रनवनेत्रयुगार्कदिक्षु ऋत्वष्टषोडशच-
तुर्द्दशभौतिकेषु । पातालपञ्चदशवह्निहिमांशुकोष्ठे
वर्णान्लिखेल्लिपिभवान्क्रमशस्तुधीमान् ॥ ३ ॥
सिद्धःसिद्ध्यतिकालेनसाध्यस्तुजपहोमतः ।
सुसिंद्धोग्रहणादेविरिपुर्मूलन्निकृन्तति ॥ ४ ॥

फिर इन खानों में जिसप्रकार से अक्षरोंका रखना होगा सो कहताहूं आदर पूर्वक सुनो, पहले खाने में अ, तीसरे खाने में बडा आ, ग्यारहवें खाने में इ, नौमें खाने में बडी ई, दूसरे खाने में उ, चौथे खाने में बडा ऊ, बारहवें खाने में ऋ, दशवें खाने में बडी ॠ, छठे खानेमें ऌ, आठवें खाने में ॡ सोलह वें खाने में ए, चौदहवें खाने में ऐ, पांचवें खाने में ओ, सातवें खाने में औ, पंद्रहवें खाने में अं, और तेरहवें खाने में अः, इस प्रकार से सोलह खानों में सोलह स्वरों को लिखै फिर इसी नियमसे सोलह कोठों में क से लेकर ह तक सब व्यंजनों को भी लिखै ॥ ३ ॥ ४ ॥

इत्यादिकंफलन्देविपूर्वाम्नायेमयोदितम् ।
नामानुरूपमेतेषांशुभाशुभफलंलभेत् ॥ ५ ॥
शृणुदेविप्रवक्ष्यामिगणनाक्रममुत्तमम् ।
नामाद्यक्षरतोदेवियावन्मन्त्रादिमाक्षरम् ॥ ६ ॥

इस प्रकार से चक्र को अङ्कितकर, सिद्ध साध्य सुसिद्ध अरि इस प्रकार से गिनती करै सिद्ध मन्त्र को ग्रहण करतेही वह कालांतर में सिद्ध होताहै, साध्य मन्त्र को ग्रहण कर जप और होम करै तब यह मन्त्र सिद्ध होता है, और सुसिद्ध मन्त्र तो ग्रहण करतेही सिद्ध होजाताहै, रिपु मन्त्र के ग्रहण करनेसे साधक का सर्वनाश होजाता है, हे देवि ! इसीप्रकार से सिद्धारि चक्रका फल पहले मैंने भलीप्रकार से आम्नाय तन्त्र में कहाहै, विशेष करके, साध्य सिद्ध सुसिद्ध अरि इनके नामानुसार शुभाशुभ फल जानना चाहिये ॥ ५ ॥ ६ ॥

कादिडांतंखादिढान्तङ्गादिणान्तंघतान्विते ।
ङादिथान्तश्चादिदान्तंछादिधान्तञ्जनान्तिके॥७॥

हे देवि ! इस समय ऊपर कहेहुए चक्र से जिस प्रकारसे गिनती होती है वह कहताहूं. तुम सुनो साधक मन्त्रके ग्रहण करनेवालेके नामका पहला अक्षर और मन्त्र के पहले अक्षर तक साध्य, सिद्ध, सुसिद्ध, अरि, इसप्रकार से गिनै ॥ ७ ॥

झादिपान्तंआदिफान्तंटादिवान्तंठभान्तिके ।
डादिमांतण्ढादियान्तंणादिरान्तंतलांतिके ॥ ८ ॥

(क) से लेकर (ड) तक(ख) से लेकर(ढ) तक (ग) से लेकर (ण) तक, (घ) से लेकर (त), (ङ) से लेकर (थ) तक, (च) से लेकर (द) तक, (छ) से लेकर (ध) तक, (ज) से लेकर (न) (झ) से लेकर (प) तक, (ञ) से लेकर (फ) तक, (ट) सेलेकर (व) तक, (ढ) से लेकर (भ) तक, (ड) से लेकर (म) तक, (ड़) से लेकर (य) तक, (ण) से लेकर (र) तक, और (त) से लेकर (ल) तक, सिद्धादिकी गिनती करै ॥ ८ ॥

वर्णत्रयम्महेशानिकोष्ठेपञ्चदशेप्रिये ।
आदिकोष्ठेचतुर्वर्णान्विलिखेत्साधकोत्तमः ॥ ९ ॥

पहले कहे हुयेके अनुसार वर्णोंको रखकर फिर एक २ खानेमें तीन २ अक्षरोंको लिखे, केवल पहले खानेमें चार अक्षर होंगे ॥ ९ ॥

वर्णाष्टकंगृहीत्वातु कथितन्तवसुव्रते ।
कोष्ठस्थितान्समादायगणनामाचरेत्सुधीः ॥
नामाद्यक्षरसंयुक्तंसिद्धिकोष्ठम्प्रकीर्त्तितम् ॥ १० ॥

हे प्रिये ! साधक इसप्रकारसे चक्रको निर्माणकर उसमें अक्षरोंको रक्खै, बुद्धिमान साधक समस्त कोठोंके वर्णोंको ग्रहणकर गिनती करै, फिर जिस खानेमें नामका पहला अक्षर दृष्टि आवै उसीको सिद्ध कोठा जानै ॥ १० ॥

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिपूजाकारन्तुसिद्धिदम् ।
यंविनापरमेशानिनाहिसिद्धिःप्रजायते ॥ ११ ॥

हे सुरेश्वरि ! इसके पीछे पूजाकी रीति कहता, हूं तुम सुनो, यह पूजा ही साधकको सिद्धिकी देनेवाली है, पूजाके बिना किसीप्रकार सेभी सिद्धि नहीं होसकती ॥ ११ ॥

शालग्रामेमणौयन्त्रेप्रतिमायांसुरेश्वरि ।
पुस्तिकायाञ्चगङ्गायांसामान्येचजलेतथा ॥ १२ ॥
अथवापुष्पयन्त्रेचपूजयेच्छिवलिङ्गके ।
यन्त्रभेदेनदेवेशिफलंसम्यक्प्रजायते ॥ १३ ॥

शालग्राममें, शिलामें, मणिमें, यन्त्रमें, प्रतिमामें, पुस्तकमें, गङ्गामें, सामान्य जलमें, पुष्प यन्त्रमें, अथवा शिव लिंगमें साधक देवीकी पूजा करै, हे देवेशि ! मैं विशेष करके यन्त्र भेदसे पूजा करनेसे उसका फल न्यूनाधिक होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

शालग्रामेशतगुणम्मणौतद्वत्फलंलभेत् ।
यन्त्रेलक्षगुणम्प्रोक्तम्प्रतिमायांतथैवच ॥ १४ ॥

शालग्राम और शिलामें देवीकी पूजा करनेसे उस पूजा का सहस्र गुणा फल होता है, मणिमें पूजा करनेसे उक्तरूप से फल होता है यंत्र और प्रतिमा में पूजाकरनेसे लाखगुणा फल कहा है ॥ १४ ॥

पुस्तिकायाञ्चगंगायांसमानफलमीरितम् ।
समान्येचजलेदेविपूजादिदोषशान्तये ॥ १५ ॥

पुस्तक और गङ्गामें देवीकी पूजा करनेसे समान फल होता है, सामान्य रूपसे जलमें पूजा करनेसे केवल पूजाके दोषोंकी शान्ति ही होती है अर्थात् दीक्षित मनुष्य जो इष्ट देवताकी पूजा न करै उससे जो दोष होता है इस पूजासे उसही दोषकी शान्ति होती है । और कोई विशेष फल नहीं होता ॥ १५ ॥

पुष्पयन्त्रेमहेशानिपूजनात्सर्वसिद्धिभाक् ।
शिवलिंगेमहेशानिअनन्तफलमीरितम् ॥ १६ ॥

हे महेशानि ! पुष्प यंत्रमें पूजा करनेसे साधककों को सब सिद्धि प्राप्त होसकती है. और शिव लिंगमें. पूजा करनेसे अनन्त फल होता है ॥ १६ ॥

नकुर्यात्पार्थिवेलिङ्गेदेवीपूजादिकाःक्रियाः ।
पार्थिवेपूजनाद्देविसिद्धिहानिःप्रजायते ॥ १७ ॥

हे प्रिये ! पार्थिव लिंगमें तो कभी भी देवीकी पूजा न करै, हे देवि ! पार्थिव लिंगमें पूजा करनेसे सिद्धिकी हानि होतीहै ॥ १७ ॥

यदिदैवान्महेशानिमृत्तिकास्खलनम्भवेत् ।
तावद्वर्षसहस्राणिनरकेपूर्णशोणिते ॥ १८ ॥

हे महेशानि ! पार्थिव लिंगमें पूजा करनेके समय यदि दैवात् उस लिंगमें से जरासी मट्टी भी खसक जाय तौ जितने उस मट्टीके कण गिरेहैं उतनेही वर्षोंतक पूजा करनेवाला नरकमें बास करता है ॥ १७ ॥

कुम्भीपाकेमहाघोरेपच्यतेपितृभिःसह ।
अतएवमहेशानिपार्थिवेनहिपूजयेत् ॥ १९ ॥

इस कारणसे पार्थिव लिंगकी पूजाके समयमें यदि उसमेंसे मट्टी खसक जाय तौ वह अपने पितरोंके सहित महाघोर कुम्भीपाक नरकमें बास करताहै, हे महेशानि ! इस कारण पार्थिव लिंगमें कदापि पूजा न करै ॥ १९ ॥

स्फाटिकादीन्समानीयलिङ्गन्निर्मायययत्नतः ।
तल्लिंगेपूजनाद्देविसर्वसिद्धियुतोभवेत् ॥ २० ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
अष्टमःपटलःसमाप्तः ॥ ८ ॥

साधक स्फटिकादि मणिओं को लाकर यतन के साथ लिंगको निर्माणकर उस लिंगकी पूजा करै, ऐसा करनें से वह साधक सर्व सिद्धिवान होसकता है ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायां
अष्टमः पटलः समाप्तः ॥ ८ ॥

नवमः पटलः ९.

शिव उवाच ।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिधनदांसर्वसिद्धिदाम् ।
यामाराध्यमहादेविकुबेरोधननायकः ॥ १ ॥

शिवजी बोले कि, इसके उपरान्त अब मैं धनदा देवी का मन्त्र और उसके पूजाकी विधिको कहताहूं यह धनदा देवी साधक को सबप्रकार की सिद्धियें प्रदान करती हैं इन्हीं धनदा देवीकी पूजा करने से यक्षराज कुबेर धनाध्यक्ष हुयेहैं ॥ १ ॥

यत्प्रसादान्महेशानिरमेच्चत्रिदशेश्वरः ।
तांविद्यांपरमेशानिश्रृणुष्ववरवर्णिनि ॥ २ ॥

जिनकी कृपा और प्रसाद को प्राप्तकर राजा इन्द्रनें अतुल सम्पत्ति प्राप्त की है, हे सुन्दरि ! उसी विद्याको मैं तुमसे कहता हूं सुनो ॥ २ ॥

दान्तम्बिन्दुसमारूढम्महामायांहरिप्रियाम् ।
रतिप्रियेततःपश्चाद्वह्निजायांततःप्रिये ॥
नवाक्षरोमहामन्त्रोद्रुतंसिद्धिप्रदायकः ॥ ३ ॥

प्रिये ! धं, ह्रीं, श्रीं, रति प्रिये स्वाहा" यह नौ अक्षर का मन्त्र है इस मन्त्र से साधक को शीघ्रही सिद्धि प्राप्त होती है ॥३॥

अनयासदृशीविद्याअनेनसदृशोजपः ।
अनयासदृशीसिद्धिर्ममज्ञानेनवर्त्तते ॥ ४ ॥

हे देवि ! इस विद्या की समान विद्या, इस मंत्रके जपकी समान जप, और इस मन्त्र सिद्धि की समान सिद्धि और मैं नहीं जानता ॥ ४ ॥

शतवक्त्रोयदिभवेद्भावंवक्तुंनशक्यते ।
पञ्चवक्त्रेणदेवेशिकथ्यतेकिम्मयाऽधुना ॥ ५ ॥

यदि कोई सौमुखों सेभी इस विद्याके माहात्म्य वर्णन करने को कटिबद्ध हो तौभी इसके सम्पूर्ण माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकैगा, हे देवेशि ! भला फिर मैं अपने पांच मुखों से उसका वर्णन कैसे कर सकताहूं ? ॥ ५ ॥

कुबेरोऽस्यऋषिःप्रोक्तःपंक्तिश्छन्दउदाहृतम् ।
देवताधनदादेवीसर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ ६ ॥

इस मन्त्रके ऋषि कुबेरहैं, और छन्द पंक्तिहै, देवता धनदा देवी कहीहैं, यह धनदा देवी साधक कों सबप्रकार की सिद्धि देती हैं ॥ ६ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्वर्गफलप्रदा ।
षड्दीर्घमाययाचैवषडङ्गन्यासमाचरेत् ॥ ७ ॥

धनदा देवी साधक को धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थों को देतीहैं हां हृदयाय नमः, हीं शिरसे स्वाहा, हूं शिखायै वषट् हैं कवचाय हुं, हौं नेत्रत्रयाय वौषट्, हः अस्त्राय फट् इसप्रकार से देवी का षडङ्गन्यास करना चाहिये ॥ ७ ॥

ध्यानमस्याःप्रवक्ष्यामियेनसिद्धोभवेन्नरः ।
देवींकाञ्चनकान्तिमिंदुविमलांरक्तांशुकाच्छादितां
हेमाम्भोजयुगाभयांकुशकरांरत्नोल्लसत्कुण्डलाम् ।

सर्वाभीष्टफलप्रदांत्रिनयनांनागेन्द्रहारोज्ज्वलां
वन्देसर्वभयापहांत्रिजगतांपापापहारींपराम् ॥८॥

इसके उपरान्त धनदा देवी का ध्यान कहताहूँ श्रवण करो, इस-प्रकार ध्यानके अनुसार देवी के स्वरूप को बिचार कर चिन्ता करने से साधक सर्वप्रकार की सिद्धिको पासकता है, धनदा देवी के शरीर की कांति निर्मलहै शुद्ध और काञ्चनकी समान इनका सफेद वर्णहै, यह लाल वस्त्रों को धारण करती हैं, इनके चारों हाथों मेंसे दो में सोनें के दो पद्म और दो में अभय मुद्रा और अंकुश विद्यमान है, यह रत्न जटित कुंडलों को धारण करे शोभा पारही हैं, और सर्वदाही साधक को सबप्रकार के इच्छानुसार फल देती हैं, धनदा देवी के तीन नेत्रहैं, इनके गले में सर्पों की माला पडीहैं धनदा देवी सबका भय और त्रिलोकी के पाप का हरण-करतीहैं, ऐसी उन परदेवीको नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥

स्वकीयात्मस्वरूपान्तांभावयेच्चित्स्वरूपिणीम् ।
एवन्ध्यात्वामहेशानिमानसैःपूजनञ्चरेत् ॥ ९ ॥

इन चित्त स्वरूपिणी देवता को अपने स्वरूपमें भावना करै, हे महेशानि ! साधक इसप्रकार से देवीका ध्यान कर मानसोपचारसे पूजा करै ॥ ९ ॥

अर्घ्यपात्रंस्थापयित्वाधेनुयोनिम्प्रदर्शयेत् ।
पीठपूजांततःकृत्वाततःपीठमनुञ्जपेत् ॥ १० ॥

इसके उपरान्त अर्घको स्थापनकर धेनु और योनि मुद्राको दिखाना चाहिये इसके पीछे पीठ देवताकी पूजा करके पीठ मन्त्रका जप करै ॥ १० ॥

आधारशक्तिमारभ्ययजेत्पद्मासनंप्रिये ।
प्रणवादिनमोऽन्तेनपूजयेत्साधकाग्रणीः ॥ ११ ॥

हे प्रिये ! आधार शक्तिसे पद्मासन तक पीठ देवताओंके नामकी आदिमें प्रणव (ओम्) और अन्तमें नमः शब्दका योगकर पूजा करनी चाहिये ॥ ११ ॥

पुनर्ध्यात्वामहेशानिमूलेनावाहनञ्चरेत् ।
षडंगेनचसम्पूज्यजीवन्यासंसमाचरेत् ॥ १२॥

इसके पीछे फिर ध्यानकर मूल मन्त्रसे आवाहन पूर्वक ह्रां हृदयाय, नमः इत्यादि के क्रमसे षड़ङ्ग पूजा को समाप्त कर जीवन्यास करै ॥ १२ ॥

मूलमंत्रंसमुच्चार्यततोद्रव्यंसमुच्चरेत् ।
देवतायैततः पश्चाद्योगात्मकमनुंस्मरेत् ॥ १३ ॥

आगे मूल मन्त्रका उच्चारणकर पूजाके समस्त द्रव्योंके नामोंको लेकर फिर उसमेंसे चतुर्थ्यन्त देवाताओं के नामका उच्चारणकर पूजाके समस्त द्रव्योंको देवीके आगे समर्पण करै ॥ १३ ॥

पाद्याद्यैःपूजयेद्देवींयथाविभवविस्तरैः ।
यन्त्रमस्याःप्रवक्ष्यामितज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ १४॥

इस प्रकार से अपनी शक्तिके अनुसार पाद्यादि उपहारोंसे देवीकी पूजा करै। इसके पीछे अब मैं धनदा देवीकी पूजाका यन्त्र कहताहूं, इस यन्त्रके जाननेसे साधक सबप्रकारसे मुक्तिको प्राप्तकर सकता है ॥ १४ ॥

नवयोन्यात्मकंचक्रंविलिखेत्कर्णिकोपरि ।
दिग्दलम्पद्ममालिख्यचतुरस्रन्ततोबहिः ॥ १५ ॥
कोणेषुवज्रंसंलिख्यमध्येबीजंसमुल्लिखेत् ।
इदंयन्त्रंमहेशानिसाक्षाद्देवीस्वरूपकम् ॥ १६ ॥
लक्ष्मींपद्मांपद्मालयांश्रियञ्चवाहरिप्रियाम् ।
शवाञ्चकमलाञ्चैवअब्जांचचञ्चलान्तथा १७॥
लोलाञ्चप्रणवाद्यैतान्नमोऽन्तेनप्रपूजयेत् ।
पुनर्मध्येततोदेवींपूजयेत्साधकोत्तमः ॥ १८ ॥

कर्णिका के बीचमें नवयोनिमय चक्र लिखै, उसके पीछे दशदल पद्म अङ्कितकर उसके बाहर चार कोने खैंचै, इन चार कोनोंके बीचमें वज्रको लिखकर कर्णिकाके बीचमें "धं" यह बीज लिखै, हे महेशानि ! यह मंत्र साक्षात् देवीका स्वरूप है ॥ १५ ॥ १६ ॥ इसके उपरान्त लक्ष्मी, पद्मालया, श्री, हरिप्रिया, शवा, कमला, आजा, चञ्चला. लोला यह सब देवताओंके चतुर्थ्यन्त नामकी आदिमें प्रणव और अन्तमें नमः शब्दको लगाकर पूजा करै ॥ १७ ॥ १८ ॥

प्राणायामंततःकृत्वायथाशक्तिजपञ्चरेत् ।
गुह्यादिकञ्जपफलन्देव्याहस्तेसमर्पयेत् ॥ १९ ॥

इसके पीछे प्राणायामकर अपनी शक्तिके अनुसार मूल मन्त्रका जप करै और "गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वमित्यादि" इस मन्त्रसे देवीके हाथमें जप समर्पण करै ॥ १९ ॥

प्राणायामन्ततः कृत्वाप्रणामाष्टाङ्गमाचरेत् ।
अथोत्थायमहेशानिविशेषार्घ्यंनिवेदयेत् ॥ २० ॥

अनन्तर पुनर्वार प्राणायामकर अष्टांग प्रणाम करै, फिर उठकर विशेष अर्घ्यको निवेदन करै ॥ २० ॥

आत्मसमर्पणंकृत्वाविहरेच्चयथेच्छया ।
किञ्चिन्नैवेद्यंस्वीकृत्यनिर्माल्यंधारयेत्ततः ॥ २१ ॥

इसके पीछे साधक देवीको अपनेको समर्पण करके इच्छानुसार विहार करे ॥ २१ ॥

लक्षमेकञ्जपेन्मत्रन्दशांशंहोममाचरेत् ।
तद्दशांशन्तर्पणञ्चअभिषेकंदशांशकम् ॥ २२ ॥
अतःकुर्यान्महेशानिदशांशविप्रभोजनम् ।
एवंकृत्वामहेशानिसाक्षात्सुरगुरुःप्रभुः ॥ २३ ॥

इस देवताके पहले कहे हुये मन्त्रको एकलाख जपै, इस जपसे दशांश होम, होमसे दशांश तर्पण करना चाहिये और तर्पणसे दशांश

ब्राह्मणोंका भोजन कराना योग्य है। हे महेश्वरि! साधक इसप्रकारसे धनदा देवीकी आराधना करनेसे साक्षात् देवताओंके गुरुकी समान होसकता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

तस्यहस्तेमहेशानिसर्वैसिद्धिर्नसंशयः ।
नित्यन्नित्यम्महेशानिईश्वरोयच्छतेधनम् ॥ २४ ॥
लक्ष्मीःसरस्वतीचैवनिवसेन्मंदिरेसुखे ।
इहलोकेमहेशानिमहेन्द्रोजायतेक्षितौ ॥ २५ ॥

हे महेशानि! जो साधक इस रीतिको ग्रहणकर धनदा देवीकी पूजा करता है उसके हाथमें सबप्रकारकी सिद्धियें विद्यमान हैं, इसमें सन्देह नहीं हे सुन्दरि! इसप्रकारकी पूजा करनेसे प्रतिदिन ईश्वर उसको धन देता है और सर्वदा उसके घरमें लक्ष्मी और सरस्वती बास करतीहैं। और इसप्रकारसे साधक पृथ्वीमें जन्म लेकर इन्द्रकी समान होता है ॥ २४ ॥ २५ ॥

मोक्षाकांक्षीमहेशानिमहामोक्षमवाप्नुयात् ।
भोगार्थीलभतेभोगान्यथेच्छंवर्त्ततेऽचिरात् ॥२६॥
इहलोकेसुखम्भुक्त्वामृतोगच्छेद्धरेःपदम् ।
मृतोराजकुलेभूयोजन्मचाप्नोतिसाधकः ॥ २७ ॥
अथातःसम्प्रवक्ष्यामिधनदास्तोत्रमुत्तमम् ।
यद्गुप्तंसर्वतन्त्रेषुइदानींतत्प्रकाशितम् ॥ २८ ॥

हे महेशानि ! मोक्षकी इच्छा करनेवाला पूजा करनेसे मोक्ष प्राप्त कर सकता है, और भोगकी इच्छा करनेवाला पुरुष चिरकाल तक इच्छानुसार भोग करता है, विशेष कर साधक इस आराधनासे सुख भोगकर अंतमें ईश्वरके पदको पाय और पुनर्वार राजकुलमें जन्म ग्रहण करता है ॥ २६ ॥ २७ ॥ अब मैं धनदा देवीका स्तोत्र कहता हूँ, यह स्तोत्र सभी तंत्रोंमें छिपा हुआहै, इस समय उसीको कहताहूं ॥ २८ ॥

नमःसर्वस्वरूपेचनमःकल्याणदायिके ।
महासम्पत्प्रदेदेविधनदायैनमोस्तुते ॥ २९ ॥

हे देवि ! तुम जगन्मयी हो, साधकको सर्वप्रकारका मंगल और महासंपत्ति देती हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करताहूं ॥ २९ ॥

महाभोगप्रदेदेविमहाकामप्रपूरिते ।
सुखमोक्षप्रदेदेविधनदायैनमोस्तुते ॥ ३० ॥

हे देवि ! तुम साधकको महाभोगकी देनेवाली और उसके सभी मनोरथोंको पूर्ण करती हो फिर सुख और मोक्षकी भी देनेवाली हो हे देवि ! धन दे मैं तुमको नमस्कार करताहूं ॥ ३० ॥

ब्रह्मरूपेसदानन्देसदानन्दस्वरूपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३१ ॥

उद्यत्सूर्यप्रकाशाभेउद्यदादित्यमण्डले ।
शिवतत्वप्रदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३२ ॥

हे देवि ! तुम ब्रह्म स्वरूपा हो, आनंदमयी हो, नित्यानंदस्वरूपिणी हो, और साधकको शीघ्रही सिद्धिकी देनेवाली हो, हे देवि धनदे ! तुमको नमस्कार है, हे देवि ! उदयशील सूर्यकी समान तुम्हारे देहकी कांति प्रकाशित होरही है, तुम आदित्य मण्डलमें निवास करती हो, और फिर तुमने शिवजीको भी तत्त्वज्ञानप्रदान किया है, हे देवि धनदे ! तुम्हें नमस्कारहै ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

विष्णुरूपेविश्वमतेविश्वपालनकारिणि ।
महासत्त्वगुणाक्रांन्तेधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३३ ॥

हे देवि ! तुम विष्णुस्वरूपा हो, इस अनन्त ब्रह्माण्डकी अभीष्ट देवता हो, तुम्हीं इस अनंत सृष्टिका पालन करती हो, और सत्त्वगुण तुम्हारे आधीनहै, हे देवि ! धनदे तुमको नमस्कारहै ॥ ३३ ॥

शिवरूपेशिवानन्देकारणानन्दविग्रहे ।
विश्वसंहाररूपेचधनदायैनमोस्तुते ॥ ३४ ॥

तुम शिवस्वरूप होकर शिवको आनंदकी देनेवाली हो तुम्हारा शरीर कारणके वश होकर आनंद पाताहै, तुम्ही इस अनंत जगत्का संहार करती हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करताहूं॥ ३४॥

पञ्चतत्त्वस्वरूपेचपञ्चाचारसदारते ।
साधकाभीष्टदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३५ ॥

हे देवि ! तुम पंचतत्त्वस्वरूप होकर सर्वदा पंचाचारमें निरत रहती हो, और तुम्हीं साधकगणोंको अभीष्ट फलकी देनेवाली हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करता हूं ॥ ३५ ॥

इदंस्तोत्रंमयाप्रोक्तंसाधकाभीष्टदायकम् ।
यःपठेत्पाठयेद्वापिसलभेत्सकलंफलम् ॥ ३६ ॥
त्रिसन्ध्यंयःपठेन्नित्यंस्तोत्रमेतत्समाहितः ।
ससिद्धिंलभतेशीघ्रन्नात्रकार्य्याविचारणा ॥ ३७ ॥

हे देवि ! साधकको अभीष्ट फलका देनेवाला यह स्तोत्र मैंने तुमसे कहा, जो इसको प्रतिदिन त्रिकालिक सध्यामें पाठ करता है उसके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होजातेहैं, इसके अन्यथा नहीं होता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

इदंरहस्यम्परमंस्तोत्रंपरमदुर्ल्लभम् ।
गोपनीयम्प्रयत्नेनस्वयोनिरिवपार्वति ॥ ३८ ॥
अप्रकाश्यमिदन्देविगोपनीयम्परात्परम् ।
प्रपठन्नत्रासन्देहोधनवाञ्जायतेऽचिरात् ॥ ३९ ॥

इतिधनदास्तोत्रम् ।

इस स्तोत्रका रहस्य अत्यंत दुर्लभहै, हे पार्वती! यह स्तोत्र अपनी योनिकी समान छिपाकर सर्वदा यत्नपूर्वक रखना चाहिये, इसको कभी भी किसीके सामने प्रकाश न करना, हे देवि ! इस अत्यन्त

गुप्त परात्पर ब्रह्मस्वरूप स्तोत्रके पाठ करनेसे साधक चिरकाल तक को धनवान् होजाताहै इसमें संशय नहीं है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

धनदायामहाविद्याकथितानप्रकाशिता ।
इदानींश्रोतुमिच्छामिकवचम्पूर्वसूचितम् ॥ ४० ॥

देवी फिर बोली, हे नाथ ! यह जो महाविद्या धनदा देवी कहीगई है यह पहले कभी प्रकाशित नहीं हुई थीं, इस समय मैं उन धनदा देवीके मन्त्रमय कवचके सुननेकी इच्छा करतीहूं ॥ ४० ॥

श्रीशिव उवांच ।

श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामिकवचम्मन्त्रविग्रहम् ।
सारात्सारतरन्देविकवचम्मन्मुखोदितम् ॥ ४१ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं मन्त्रमय कवच कहताहूं तुम सुनो, हे देवि ! यह कवच सबके सारकाभी सार है, पहले यह कवच हमारे मुखसे प्रकाशित हुआ है ॥ ४१ ॥

धनदाकवचस्यास्यकुबेरऋषिरीरितः ।
पंक्तिश्छन्दोदेवताचधनदासिद्धिदासदा ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ४२ ॥

इस धनदा कवचके ऋषि कुबेर जी कहे हैं, पंक्ति इसका छन्द है और देवता धनदाहै, यह सर्वदाही साधकको सिद्धि देता है,

धर्मार्थ काम मोक्ष में इसका विनियोगहै अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चारों वर्गोंका साधनही इस कवचके पाठका फल है ॥ ४२ ॥

धंबीजम्मेशिरःपातुह्रींबीजम्मेललाटकम् ।
श्रींबीजम्मेमुखम्पातुरकारंहृदिमेऽवतु ॥ ४३ ॥
तिकारम्पातुजठरम्प्रिकारम्पृष्ठतोऽवतु ।
येकारञ्जंघयोर्युग्मेस्वाकारम्पादमूलके ॥ ४४ ॥

धं, यह बीज हमारे मस्तक की रक्षा करै, ह्रीं, यह बीज हमारे ललाट की, श्रीं, यह बीजं हमारे मुख की, र, यह वर्ण हमारे हृदय की, ति, यह वर्ण हमारे उदर की, प्रि, यह वर्ण हमारे पीठकी, ये, यह वर्ण हमारे जंघाओंकी, स्वा, यह वर्ण हमारे चरण मूल की ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

शीर्षादिपादपर्यन्तंहकारंसर्वतोऽवतु ।
इत्येतत्कथितंकान्तेकवचंसर्वसिद्धिदम् ॥ ४५ ॥

और ह यह वर्ण हमारी शिखा से लेकर चरण तक हमारे सब शरीर की रक्षा करै, हे प्रिये ! तुम्हारे निकट यह कवच मैंने कहा, यह सब सिद्धिका देनेवालाहै, कवच अर्थात् वख्तर के पहरने से जिसप्रकार शरीरमें अस्त्रादि नहीं बिध सकते उसीप्रकार इस कवच के पाठ करने से समस्त शरीर रक्षित होताहै, इस कारण इस स्तोत्र के कवच को कहागया है ॥ ४५ ॥

गुरुमभ्यर्च्यविधिवत्कवचम्प्रपठेद्यदि ।
शतवर्षसहस्राणांपूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ ४६ ॥

हे देवि ! यदि कोई साधक विधिपूर्वक गुरुका पूजनकर इस कवच का पाठ करता है, तो वह सहस्र वर्ष की पूजा के फल को पाता है और उस्से भी अधिक फल प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

गुरुपूजांविनादेविनहिसिद्धिःप्रजायते ।
गुरुपूजापरोभूत्वाकवचम्प्रपठेत्ततः ॥ ४७ ॥

हे देवि ! विना गुरुकी पूजा के कदापि सिद्ध नहीं होता अतएव पहले गुरु की पूजाकर पीछे कवच का पाठ करना चाहिये ॥ ४७ ॥

सर्वसिद्धियुतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ।
प्रातःकालेपठेद्यस्तुमन्त्रजापपुरःसरम् ॥ ४८ ॥
सोऽभीष्टफलमाप्नोतिसत्यंसत्यन्नसंशयः ।
पूजाकालेपठेद्यस्तुदेवींध्यात्वाहृदम्बुजे ॥ ४९ ॥
षण्मासाभ्यन्तरेसिद्धिर्नात्रकार्य्याविचारणा ।
सायङ्कालेपठेद्यस्तुसशिवोनात्रसंशयः ॥ ५० ॥

उस कवच के पाठ करनेसे साधक सब प्रकारकी सिद्धि वाला होकर भैरव की समान सब जगह विचरण करता है जो साधक प्रातःकाल मंत्र जपकर इस कवच का पाठ करता है वह अपने अभी-ष्ट फल को पाता है, हे देवि ! मेरे इस वचन को तुम सत्यहीसत्य

जानो, इस में किसी प्रकार का संदेह न करो, हे प्रिये! जो मनुष्य पूजा के समय धनदा देवी का अपने हृदय कमल में ध्यान करके इस कवच का पाठ करता है, सो मनुष्य छैःमास के बीचमेंही सिद्धि को पासकता है, जो सन्ध्या के समय इस कवच का पाठ करै, वह स्वयं शिवस्वरूप होजाता है इसमें संदेह नहीं॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

भूर्जेविलिख्यगुलिकांस्वर्णस्थांधारयेद्यदि ।
पुरुषोदक्षिणेबाहौयोषिद्वामभुजेतथा ॥
सर्वसिद्धियुतोभूत्वाधनवान्पुत्रवान्भवेत् ॥ ५१ ॥

हे देवि! यदि भोजपत्रपर् यह कवच लिखकर सुवर्ण के तवीज में मढाकर पुरुष दहिनी भुजा में और स्त्री बांई भुजा में धारण करती है वह सब सिद्धिसम्पन्न होकर धनवान् और पुत्रवान् होजाते हैं॥ ५१ ॥

इदंकवचमज्ञात्वायोभजेद्धनदांशुभे ।
सशस्त्रघातमाप्नोतिसोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्५२॥

हे सुन्दरि! इस कवच को न जानकर जो मनुष्य धनदा देवी की आराधना करता है वह मनुष्य शस्त्राघात से पतित होकर मृत्यु के मुख में जाता है॥ ५२ ॥

कवचेनावृतोनित्यंयत्रयत्रैवगच्छति ।
अतएवमहादेविसपूज्योनात्रसंशयः ।
समाप्तंकवचन्देविकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि॥ ५३ ॥

हे देवि ! इस कवच के साधक चाहे जिस जगह जाने की इच्छा करै उसी स्थान में सब का पूज्य होकर वास करसकता है इसमें संदेह नहीं, हे देवि ! यह धनदादेवी का कवच समाप्त हुआ अब क्या तुम्हारे सुननेकी इच्छा है सो कहो ॥ ९३ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

अहोपूज्यमहादेवसंसारार्णवतारक ।
सर्वयोगमयस्त्वंहिशरणागतवत्सलः ॥ ९४ ॥

देवीजी बोलीं हे महादेव ! तुम संसार के पूज्य हो, तुम्हीं संसार सागर के उद्धार करने हारे हो, तुम्हीं सर्व योगमय हो, मैं तुम्हारी शरणागतहूं शरणागतपर तुम विशेष स्नेह करते हो ॥ ९४ ॥

केनोपायेनदेवेशशीघ्रंसिद्धाभवन्तिहि ।
तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिकथ्यतांपरमेश्वर ॥ ९५ ॥

हे परमेश्वर ! किस उपाय के करने से साधक शीघ्र सिद्धि को पासकता है, उसके श्रवण करने की इच्छा करतीहूं, वह विस्तार सहित वर्णन करो ॥ ९५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥

प्रेतभूमौतुसप्ताहम्प्रत्यहम्परमेश्वरि ।
दिक्सहस्रञ्जपेद्विद्यांतदासिद्धिर्नसंशयः ॥ ९६ ॥

शिवजी बोले कि, हे परमेश्वरि ! स्मशान भूमि में स्थिति होकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन दशसहस्र इष्टदेवता के मूल मन्त्रका

जपकरे इसके होने से शीघ्रही सिद्धि होसकती है इस में संशय नहीं ॥ ५६ ॥

अथवापरमेशानिशवमानीययत्नतः ।
वितस्तिमात्रखातेतुपातनंहट्टमन्दिरे ॥ ५७ ॥

हे परमेश्वरि ! यत्नपूर्वक एक मुरदे को लाकर उसको १२ अंगुल मट्टी के तले दाबै उसके ऊपर उपवेशन करै ॥ ५७ ॥

अमावस्यांसमारभ्ययावच्छुक्लाष्टमीभवेत् ।
प्रत्यहम्प्रजपेद्विद्यांगजान्तकसहस्रकम् ॥
तदासिद्धोभवेद्देविनान्यथाममभाषितम् ॥ ५८ ॥

अनन्तर अमावस्या से शुक्लाष्टमी तक प्रतिदिन एक हजार आठ इष्ट मन्त्र का जपकरै, हे देवि ! इसप्रकार की पूजा करने से वह साधक निश्चयही सब प्रकार की सिद्धि को पासकता है, हे प्रिये तुम मेरे इस वचनको कदापि अन्यथा मत जानिये ॥ ५८ ॥

यदेतत्कथितंसर्वंतत्त्वज्ञानेसुरेश्वरि ।
तत्त्वज्ञानंविनादेविनाहिसिद्धिःप्रजायते ॥ ५९ ॥

हे सुरेश्वरि ! मैंने यह सिद्धिकी रीति कही, इस तत्त्व ज्ञानिक होने से सिद्धि की प्राप्ति होती है, हे देवि ! कदाचित् भी तत्व ज्ञान के विना जाने साधकको सिद्धि नहीं होती ॥ ५९ ॥

अथवापरयत्नेनकेवलंशक्तियोगतः ।
पूर्वंचतुष्टयन्देविसमानीयप्रयत्नतः ॥६०॥

या पहलीकही हुई चारों शक्तियोंको लायकर परम यत्नके साथ केवल उस शक्तियोंसेही देवीकी पूजा करै ॥ ६० ॥

तस्मैदत्त्वास्वयम्पीत्वाप्रजपेद्यदिसाधकः ।
तदासिद्धिंलभेद्देविसत्यंसत्यन्नसंशयः॥ ६१ ॥

अनन्तर साधक उन शक्तियोंको पान कराकर उससे जो बचे स्वयं पान करै और फिर उन शक्तियोंके साथ जप करना चाहिये । इस प्रकार आराधना करनेसे साधकको शीघ्रही सिद्धि प्राप्ति होसकती है हे देवि ! मेरे इस वचनको तुम सत्यहीसत्य जानो, इसमें किसी प्रकारका भी सन्देह न करो ॥ ६१ ॥

यत्रयत्रविनिर्द्दिष्टञ्जपकार्येसुरेश्वरि ।
तत्रतत्रमहेशानिगजान्तकसहस्रकम् ॥ ६२ ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
नवमः पटलः समाप्तः ॥ ९ ॥

हे सुरेश्वरि ! जिस २ स्थानमें जप करनेकी संख्या नहीं कही है वहां अष्टोत्तर (१००८) सहस्र जप करना होगा ॥ ६२ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
नवमः पटलः ॥ ९ ॥

दशमः पटलः १०.

श्रीदेव्युवाच ।

मातङ्गीपरमेशानीत्रैलोक्येषुचदुर्ल्लभा ।
मन्त्ररूपेणदेवेशकथयस्वमयिप्रभो ॥ १ ॥

फिर पार्वतीजी बोलीं हे देवेश्वर ! इस त्रिलोकीके बीचमें परमेश्वरी मातङ्गी देवीजी अत्यन्त दुर्लभ हैं, हे प्रभो ! अब कृपाकर उन्हीं मातंगी देवीके मन्त्रको आप मेरे निकट कहिये ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ।

शृणुचार्वङ्गिसुभगेमातङ्गीमन्त्रमुत्तमम् ।
प्रणवञ्चसमुद्धृत्यमहामायांसमुद्धरेत् ॥ २ ॥
कामबीजंसमुद्धृत्यकूर्च्चबीजंसमुद्धरेत् ॥
मातंगींङेयुतांपश्चादस्त्रमन्त्रंसमुद्धरेत् ॥
वह्निजायान्वितोमन्त्रःसर्वतन्त्रेषुपूजितः ।
सार्द्धदशाक्षरीविद्याब्रह्मादिपरिपूजिता ॥ ३ ॥
अस्यविज्ञानमात्रेणपुनर्जन्मनविद्यते ।
कामतुल्यश्चनारीणांरिपूणांशमनोपमः ॥
कुबेरइववित्ताढ्योधरणीसहशक्षमः ॥ ४ ॥

शिवजी बोले, हे सुन्दरि ! मैं मातंगी देवीके मन्त्रको तुम्हारे निकट कहता हूँ. हे सुभगे ! सावधान होकर श्रवण करो, ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा, यह मातंगीका मन्त्र सब तन्त्रोंमें पूजित है, ब्रह्मादि देवता इस साढेदस अक्षरकी विद्याकी पूजा करते हैं ॥ २–३ ॥ जिसने इस विद्याको भलीप्रकारसे जान लिया है, उस का फिर पृथ्वीमें जन्म नहीं होता और वह मनुष्य स्त्रियोंके समीप कामदेवकी समान दृष्टि आता है शत्रुओंके सामने यमराजकी समान, कुबेरकी समान धनवान् होकर पृथ्वीकी समान क्षमाशील होजाता है ॥ ४ ॥

विराट्छन्दोमहेशानिमातंगीदेवतास्मृता ।
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ५ ॥

हे महेशानि ! इस मन्त्रका छन्द विराट् है और देवता मातंगी हैं, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष यह इसका विनियोग है, अर्थात् धर्म, अर्थ काम, मोक्ष यह चारों पदार्थ प्राप्त होजातेहैं ॥ ५ ॥

ध्यानपूजादिकंसर्वंयामलेचपुरोदितम् ।
तस्याःस्तोत्रंमहापुण्यंसावधानावधारय ॥ ६ ॥

हे देवि ! इस विद्याका ध्यान और पूजा सभी मैंने यामल तन्त्रमें कहा है, इस समय इनका महापुण्य देनेवाला स्तोत्र कहताहूं सावधान होकर सुनो ॥ ६ ॥

उद्यदादित्यसङ्काशांनयनत्रयशोभिताम् ।
भक्तानाम्वरदान्देवींमातंगींतान्नसंशयः ॥ ७ ॥

जिनके शरीरकी कान्ति उदय होते हुए सूर्यकी समान उज्ज्वल है, जो भक्तोंको वर देती है, वह अपने तीन नेत्रोंसे शोभा पा रहीहैं, उन मातंगी देवीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ७ ॥

श्यामवर्णांमहादेवींसर्वालंकारभूषिताम् ।
द्रुतसिद्धिप्रदांदिव्यांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥ ८ ॥

जो श्याम वर्णकी हैं और सब वस्त्राभूषणोंसे भूषित हैं, जो भक्तों को शीघ्र ही सिद्धि देती है, उन दिव्यरूपिणी महादेवी मातंगी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ८ ॥

मुक्ताहारलतावल्यांनानामणिविराजिताम् ।
कोटिविद्युत्प्रतीकाशांमातंगींतान्नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

जिनके गलेमें मोतियोंका हार शोभायमान है, जो नानाप्रकारकी मणियोंसे सुसज्जित हैं, जो करोड़ों बिजलियोंकी समान प्रकाश पा रही है, उन मातंगी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ९ ॥

वरदांवरदानाढ्यांवरमालासुधारिणीम्।
दैत्यदानवसंहर्त्रींमातंगींतान्नमाम्यहम् ॥ ॥ १० ॥

जो साधकको वरदेती है, जिन्होंने वर मुद्रा और मालाको धारण किया है, जो दैत्य और दानवोंको संहार करती है, उन्हीं मातंगी देवीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १० ॥

किङ्किणीनरहस्ताढ्यांकटिदेशसुशोभनाम् ।
पट्टवस्त्रपरीधानांमातङ्गींतांनमाम्यहम् ॥ ११ ॥

जिन्होंने अपनी कमरमें मनुष्योंके हाथोंकी तगड़ी पहरकर शोभा पाई है, जो पीताम्बर पहरे हुए हैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ११ ॥

सौदामिनीसमाभासांनानालंकारसंयुताम् ।
इन्द्रादिदेवतासेव्यांमातङ्गींतांनमाम्यहम् ॥ १२ ॥

जो बिजलीकी समान प्रभावाली हैं, जो विविध प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित हैं, इन्द्रादि देवता जिनकी सदा सेवा करते हैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १२ ॥

शुद्धकांचनसंयुक्ताञ्चरणांगुलिराजिताम् ।
माणिक्यरत्नसंयुक्तांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥१३॥

पवित्र तपे हुए सुवर्णसे जिनके चरणोंकी अंगुली शोभा पा रही हैं जो माणिक्य आदि रत्नोंसे विभूषित होरही हैं, ऐसी उन मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ १३ ॥

दिङ्मुखेदशचन्द्राढ्यांसुधावर्षणकारिणीम् ।
देववृन्दसमायुक्तांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥ १४ ॥

दशों दिशायें जिनके दश वदनकी समानहैं,जो अपने चन्द्र समान दशों मुखोंसे संसारमें अमृत वर्षाती हैं, जो देवताओंसे पूजितहैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ १४ ॥

इदंस्तोत्रम्मयाप्रोक्तंसाधकाभीष्टदायकम् ।
त्रिसन्ध्ययंयःपठेन्नित्यन्तस्यसिद्धिरदूरतः ॥ १५ ॥

हे देवि ! मैने यह मातंगीस्तोत्र कहा यह स्तोत्र साधकको अभीष्ट फलका देनेवाला है, जो साधक इस स्तोत्रको प्रतिदिन त्रिकालिक संध्याके समय पाठ करता है, उनको शीघ्र ही सिद्धि हो जाती है ॥ १५ ॥

पूजाकालेसकृद्वापियःपठेत्स्तोत्रमुत्तमम् ।
तंसाधकम्विलोक्यैवकुबेरोऽपितिरस्कृतः ॥ १६ ॥

जो मनुष्य पूजाके समय एकबार भी पांठ करता है, उस साधकके दर्शन करनेसे कुबेर भी लज्जित हो जाता है अर्थात् वह मनुष्य कुबेरसे भी अधिक धनवान् होजाता है ॥ १६ ॥

यस्मैकस्मैनदातव्यन्नप्रकाश्यंकदाचन ।
प्रकाशात्सिद्धिहानिःस्यात्तस्माद्यत्नेनगोपयेत् ॥

हे देवि ! इस स्तोत्रको साधारण मनुष्योंको न देना, न सब जगह प्रकाशित करना, कारण यह है ऐसा करनेसे सिद्धिमें हानि होगी, इस कारण यत्नपूर्वक छिपाकर रखना योग्य है ॥ १७ ॥

स्तोत्रंसमाप्तन्देवेशिकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।
कथयस्वमहाभागेयत्तेमनसिवर्त्तते ॥ १८ ॥

हे देवेशि ! यहां मातंगी देवीका स्तोत्र समाप्त हुआ, हे प्राणवल्लभे ! अब जो तुम्हारे सुननेकी इच्छा है वह प्रकाश करके कहो॥१८॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेवजगन्नाथजगन्निस्तारकारक ।
मातंगीकवचन्नाथश्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ॥ १९॥

देवी बोलीं, हे देवदेव ! तुम्हीं संसारके अधीश्वर और तुम्हीं जगत् के उद्धार करते हो. हे नाथ ! अब मातंगी देवीके कवच सुननेका मेरा अभिलाष हुआ है ॥ १९ ॥

यांसमाराध्यदेवेशधनेशोऽभूद्धनाधिपः ।
यामाराध्यमहादेववासवस्त्रिदशेश्वरः ॥ २० ॥
ब्रह्माविष्णुमहारुद्राःसमाराध्यसुरेश्वरीम् ।
सृष्टिस्थितिलयान्देविकर्त्तारोजगदीश्वराः ॥
तस्यास्तुकवचन्दिव्यंकथयस्वानुकम्पया॥२१॥

हे देवेश्वर ! जिनकी पूजा करनेसे कुबेर धनपति हुए हैं. एवं जिनकी पूजासे इन्द्र त्रिदशेश्वर हुए हैं, ब्रह्मा विष्णु महारुद्रने भी जिनकी पूजा करके सृष्टिकी, स्थिति करनेहारे और प्रलय कारक संसारके अधीश्वर हुए हैं, उन्हीं मातंगी देवीके कवचको मेरे प्रति दयाकरके कहिये ॥ २० ॥ २१ ॥

श्रीशिव उवाच ।

श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामिमातंगीकवचंशुभम् ।
तवस्नेहान्महादेविकवचम्ब्रह्मरूपकम् ॥ २२ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं मातंगी देवीके कवचको कहता हूं तुम श्रवण करो, यह कवच सर्व साधारणको शुभका देनेवाला है, हे देवि ! मैं तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर परब्रह्म स्वरूप इस कवचको कहता हूं ॥ २२ ॥

त्रैलोक्यरक्षणस्यास्यदक्षिणामूर्त्तिसंज्ञकः ।
ऋषिश्छन्दोविराड्देविमातंगीदेवतास्मृता ॥
धर्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ २३ ॥

यह कवच त्रिलोकीकी रक्षा करता है. इस त्रिलोकीकी रक्षा करनेवाले कवचके ऋषि दक्षिणामूर्ति नामवाले भैरवजी कहेहैं, छन्द विराट् है, मातंगीदेवी देवता है, और धर्म अर्थ काम मोक्ष इसमें इसका विनियोग होता है अर्थात् इस कवचके पाठ करनेसे धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारोंवर्गोंकी प्राप्ति होतीहै ॥ २३ ॥

ओंबीजम्मेशिरःपातुह्रींबीजम्मेललाटकम् ।
क्लींबीजंचक्षुषोःपातुनासायाम्परिरक्षतु ॥ २४ ॥
माकारंवदनम्पातुतकारंकण्ठकेऽवतु ।
ङ्ग्यैकारंस्कन्धदेशंचफकारम्बाहुयुग्मकम् ॥२५॥

टकारंहृदयम्पातुस्वकारंस्तनयुग्मकम् ।
पृष्ठदेशन्तथानाभिञ्जठरंलिंगदेशकम् ॥ २६ ॥
पादद्वन्द्वंचसर्वांगंहाकारम्परिरक्षतु ।
सार्द्धदशाक्षरीविद्यासर्वाङ्गंपरिरक्षतु ॥ २७ ॥

"ॐ" यह बीज हमारे शिरकी रक्षा करै इसीप्रकार "ह्रीं" यह बीज हमारे मस्तककी, "क्लीं" यह बीज हमारे दोनों नेत्रोंकी और नासिका-की, "मा" यह वर्ण हमारे वदनकी "त" यह वर्ण हमारे कंठ देशकी, "ङ्ग्यै" यह वर्ण हमारे दोनों कन्धोंकी "फ" यह वर्ण हमारे दोनों बाहोंकी "ट" यह वर्ण हमारे हृदयकी "स्वा" यह वर्ण हमारे दोनों स्तनोंकी, एवं "हा" यह हमारे पीठकी,नाभि, उदर, लिंगदेश, दोनों चरण इत्यादि समस्त अंगोंकी रक्षा करैं, यह साढे दश अक्षरकी विद्या मेरे समस्त शरीरकी रक्षा करै ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

इन्द्रोमाम्पातुपूर्वेचवह्निकोणेऽनलोवतु ।
यमोमांदक्षिणेपातुनैर्ऋत्यांनिर्ऋतिश्चमाम् ॥ २८ ॥
पश्चिमेवरुणःपातुवायव्यांपवनोऽवतु ॥ २९ ॥
कुबेरोदिशिकौवेर्यामीशईशानकोणके ।
ऊर्ध्वंब्रह्मासदापातुअधश्चानन्तएवच ॥ ३० ॥

इन्द्र देवता हमारी पूर्व दिशामें, अग्नि देवता हमारे अग्नि कोणमें, यम मेरे दक्षिण कोनेमें, निर्ऋति मेरे नैर्ऋत कोणमें, बरुण देव मेरी

पश्चिम दिशामें, पवन देव मेरी बायु कोण में, कुबेर मेरी उत्तर में, महादेव ईशान कोण में, ब्रह्मा मेरी ऊपरकी दिशामें और अनन्त देवता मेरी अधो देशकी रक्षा करैं ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

रक्षाहीनन्तुयत्स्थानंवर्जितंकवचेनतु ।
तत्सर्वंरक्षमेदेविमातंगिसर्वसिद्धिदे ॥ ३१ ॥

जो जो स्थान रक्षा हीन और कवचसे रहित है उसी २ स्थानमें सर्व सिद्धिकी देनेवाली मातङ्गी देवी जी रक्षा करैं ॥ ३१ ॥

इतितेकथितन्देविकवचम्परमाद्भुतम् ।
त्रिसन्ध्यंयःपठेन्नित्यंससाक्षाच्छंकरःस्वयम्॥३२॥

हे देवि! तुमसे यह मैंने परम अद्भुत कवच को कहा, इस कवच का प्रतिदिन प्रातःकाल मध्याह्न समय और सायङ्कालको जो कोई पाठ करता है, वह साक्षात् शिव स्वरूप होजाता है ॥ ३२ ॥

पुष्पांजलाष्टकन्दत्त्वामूलेनैवपठेत्सकृत् ।
शतवर्षसहस्राणांपूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

मूल मन्त्रसे देवीको आठ पुष्पाञ्जलि देकर एकबारही इस कवच का पाठ करनेसे सहस्रवर्षकी पूजाका फल होताहै ॥ ३३ ॥

भूर्ज्जेविलिख्यगुलिकांस्वर्णस्थांधारयेद्यदि ।
सर्वसिद्धियुतःसोऽपिसर्वसिद्धितपोयुतः ॥ ३४ ॥

इस कवचको भोजपत्र पर लिखकर यदि कोई सुवर्णमें मढाकर पहरता है, वही साधक सब प्रकारकी सिद्धि के अनुकूल तपस्यायुक्त होकर सर्व सिद्धिवान होजाता है ॥ ३४ ॥

ब्रह्मास्त्रादीनिशस्त्राणितद्गात्रंप्राप्यपार्वति ।
माल्यानिकुसुमान्येवभवन्त्येवनसंशयः ॥ ३५ ॥

हे पार्वति ! जो मनुष्य इस सर्वरक्षा करनेवाला कवच का पाठ करता है उसके शरीर में जो यदि किसी प्रकार से ब्रह्मा का अस्त्र लगभी जाय तौ वह अस्त्र कुसुममयी माला होकर उसके शरीर में शोभित होता है, इसमें सन्देह नही ॥ ३५ ॥

नदेयम्परशिष्येभ्योनाभक्तेभ्योविशेषतः ।
देयंशिष्यायशान्तायचान्यथापतनंलभेत् ॥ ३६॥

हे देवि ! यह कवच भक्तिहीन मनुष्यको और पर शिष्यको कदापि न दे । जो शान्त और अपना शिष्य हो उसीको यह कवच देना चाहिये इसके विपरीत होनेसे इसका पतन (अवनति) होजाता है ॥ ३६ ॥

प्रातःकालेपठेद्यस्तुगुरुपूजापुरःसरम् ।
तस्यसर्वार्थसिद्धिःस्यात्साशिवोनात्रसंशयः ॥३७॥

हे देवि , जो साधक प्रातःकालमें गुरुकी पूजाकर इस कवच का पाठ करता है उसको सर्व सिद्धि मिलती है, और वह मनुष्य साक्षात् शिवकी समान होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३७ ॥

मध्याह्नेप्रपठेद्यस्तुगुरुचिन्तापुरःसरम् ।
कुबेरइववित्ताढ्योजायतेमदनोपमः ॥ ३८ ॥

हे देवि ! जो साधक मध्याह्न समय अपने सहस्र कमलके पत्तोंपर गुरुदेव की चिन्ता करते २ इस कवच का पाठ करता है वह कुबेर की समान धनवान और कामदेव की समान रूपवान होजाता है ॥ ३८ ॥

सायंकालेपठेद्यस्तुध्यात्वादेवींहृदम्बुजे ।
सर्वसिद्धियुतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ॥ ३९ ॥

जो मनुष्य सन्ध्या के समय हृदयकमल में इष्ट देवता का ध्यान करके इस कवच का पाठ करै वह सबप्रकार की सिद्धिवाला होकर भैरव की समान सब जगह विचरण करसकता है ॥ ३९ ॥

गुरुपूजायुतोभूत्वाकवचम्प्रपठेद्यदि ।
लक्ष्मीःसरस्वतीतस्यनिवसेन्मन्दिरेसुखम् ॥४०॥

यदि कोई साधक गुरुकी पूजा में रत होकर इस कवच का पाठ करता है उसके गृहमें लक्ष्मी और सरस्वती सुखसे निवास करती हैं ॥ ४० ॥

इदंकवचमज्ञात्वामातंगींयदिवाजपेत् ।
इहलोकेदरिद्रःस्यान्मृतेशूकरतांव्रजेत् ॥ ४१ ॥

हे देवि ! इस कवच को न जानकर यदि कोई मातंगी देवी की पूजा करै या मंत्रका जप करै तो वह इस लोकमें दरिद्र होकर मरने के समय पर लोक गमनकर फिर शूकरकी योनिको प्राप्त होता है ॥ ४१ ॥

समाप्तंकवचंदेविशृणुमत्प्राणवल्लभे ।
षट्सहस्रञ्जपेन्मंत्रंदशांशंहोमयेत्सुधीः ॥ ४२ ॥

हे देवि ! यहां पर्यन्त मातंगी देवी का कवच समाप्त हुआ, हे प्राण वल्लभे ! इसके पीछे अब जो कहता हूं श्रवण करो, षट् सहस्र मातंगी के मंत्र को जप कर बुद्धिवान साधक जप के दशांश अर्थात् षट् जत (दिन) होम करै ॥ ४२ ॥

ब्रह्मवृक्षोद्भवैःकाष्ठैर्होमात्सर्वसमृद्धिदः ।
तर्पणंचाभिषेकंचदशांशमाचरेत्सुधीः ॥ ४३ ॥
तद्दशांशंमहेशानिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
ततःसिद्धोभवेन्मंत्रीनान्यथाममभाषितम् ॥ ४४ ॥

हे देवि ! ढाककी लकडियों से होम करना चाहिये इस प्रकार जप और होम करके साधक सर्वसिद्धि सम्पन्न होसकता है, इसके पीछे होम का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश अभिषेक करना चाहिये, हे देवि ! साधक इस कार्य को करके अभिषेक के दशांश ब्राह्मण भोजन करावै जो मनुष्य इस प्रकार से मातंगी देवीकी पूजा

करता है वह साधक सब प्रकारसे सिद्धि प्राप्त कर सकता है, हमारे इस बचनका कदापि अन्यथा मत जानो ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

सकृत्कृतेपरेशानियदिसिद्धिर्नजायते ।
पुनस्तेनैवकर्त्तव्यंततःसिद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥४५॥

इति गुप्तसाधनतंत्रे पार्वतीशिवसंवादे
दशमः पटलः समाप्तः ॥ ११ ॥

हे देवि ! यदि एक बार इस प्रकार साधन करनेसे सिद्धि न हो तो पुनर्वार इसी प्रकारसे पूजाकरै तो निश्चयही सिद्धि प्राप्त होगी४५

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेशिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
दशमः पटलः ॥ १० ॥

एकादशः पटलः ११.

श्रीदेव्युवाच ।

विश्वकर्त्ताविश्वहर्ताविश्वसंसारपालकः ।
त्वांविनासंशयच्छेत्तानहित्राताचकुत्रचित् ॥ १ ॥

फिर पार्वती जी बोलीं हे देव देव ! तुम संसार की सृष्टि करने हारे और संहार करने हारे और तुम्हीं इस सृष्टि का पालन करते हो. हे नाथ ! तुम्हारे बिना कोई संदेहको निवारण करने वाला ऐसा मैं किसीको नहीं देखती और तुम्हारे आतिरिक्त उद्धार करने वाला भी कोई नहीं है ॥ १ ॥

वैष्णवेषुचशैवेषुशाक्तेशौरगणेपिच ।
सर्वत्रविहितांमालांवदमेपरमेश्वर ॥ २ ॥

विष्णु में, शिवमंत्रादिके जपमें, शक्ति देवताकी आराधना में, सूर्यमंत्रके जप में, गणेश मंत्रके साधन में, जिस २ माला से जप करना होता है सो मुझसे कहिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

अक्षमालामहेशानिपंचाशद्वर्णरूपिणी ।
अकारादिर्महेशानिक्षकारान्तोयतःप्रिये ॥ ३ ॥
अक्षमालासमाख्यातासर्वतन्त्रप्रपूजिता ।
अस्याजपनमात्रेणमहामोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

ईश्वर बोले हे महेशानि ! पचास वर्णोंहीको अक्षमाला कहा है, हे प्रिये ! इस कारणसे "अ" से लेकर "क्ष" तक पचास अक्षर ही मालाके अन्तर्गत हैं, इस कारण इसको अक्षमाला शब्दसे निर्णय किया गया है, यह माला सर्वतंत्रोंमें पूजितहै, इस माला के जपमात्र-सेही साधकको महामोक्षकी प्राप्ति होतीहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

योगमालाजपादेवसर्वयोगेश्वरप्रभो ।
देहमध्यस्थितांमालांपंचाशद्वर्णरूपिणीम् ॥ ५ ॥

तांविहायमहादेवअस्थिमालांजपेत्कथम् ।
दीक्षितस्यचयच्चास्थितद्वर्ज्यंवाकथंविभो ॥ ६ ॥
यस्यच्छायादिसंस्पर्शादशुचिर्जायतेपुमान् ।
तस्यास्थिचसमानीयसर्वाङ्गेभूषणंकथम् ॥ ७ ॥

देवी जी बोलीं हे प्रभो ! योगमालाके जप करनेसे तत्क्षणात् वह साधक योगों में ईश्वर होजाताहै, इस समय मुझे यही पूछनाहै कि, शरीरके भीतर यह पचास वर्णस्वरूप मालाही है, हे महादेव ! उसको छोड कर साधक गण किस कारण से अस्थिकी मालाका जप करते हैं, और फिर जपके कार्यमें अस्थिकी मांला कही जाकर भी किस कारण से दीक्षित मनुष्य की अस्थि को साधक नहीं लेते और जिनकी परछांही मात्रसेभी मनुष्य अशुद्ध होजाताहै, हे नाथ ! किस कारणसे अशुद्ध मनुष्यकी अस्थिको लाकर साधकगण अपने अंग का भूषण करते हैं, हे प्राणेश्वर ! मेरे इन समस्त संदेहों को आप दूर कीजिये ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

श्रीशिव उवाच।

शक्तिंचमंत्रपूतंचब्राह्मणादीन्सुरेश्वरि ।
वर्जयित्वाप्रयत्नेनशृणुमत्प्राणवल्लभे ॥
कुर्याच्छवंतथामालांमुण्डंश्मशानमेवच ॥ ८ ॥

शिव जी कहने लगे हे सुरेश्वरि ! हे प्राणाधिके ! यत्नपूर्वक श्रवण करो, स्त्री का शरीर मंत्रपूत अर्थात् दीक्षादि संस्कारोंसे शुद्ध पवित्र मनुष्यका शरीर, और ब्राह्मणका शरीर भी छोडकर, शवमाला, मुंडको श्मशानसे लाना चाहिये, कदाचित् किसी स्त्रीके शरीरसे शव साधन नहीं करै, इनके अस्थियोंकी माला कदापि न करै, एवं उनके मुंडोंको ग्रहण कर देवताके साधनमें प्रवृत न हो, अथवा स्त्री दीक्षित मनुष्य और ब्राह्मणके शवसे मंत्र सिद्धि न करै ॥ ८ ॥

प्रणवंनिष्कलंसाक्षाद्ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
प्रणवंप्रजपेद्यस्तुससाक्षाद्विष्णुरूपधृक् ॥ ९ ॥

हे देवि ! एक मात्र प्रणव अर्थात् ॐ यह वर्ण साक्षात् ब्रह्म विष्णु शिवात्मक है जो प्रणव मंत्रोंका जप करता है उसीको विष्णु कहा जाता है ॥ ९ ॥

ॐकारात्सर्ववर्णानिजायन्तेनात्रसंशयः ।
ॐकारंत्रिगुणंदेविगुणातीतन्तुनिष्कलम् ॥ १० ॥

हे देवि ! ॐकारसे सब वर्णोंकी उत्पत्ति हुई है, इसमें संदेह नहीं यह ॐकार सत्त्व, रज, तम यह तीनों गुणोंसे विशिष्ट और गुणातीत निष्कल ब्रह्मस्वरूप है ॥ १० ॥

गुरुवक्त्रान्महामंत्रंप्राप्नोतिचैवमानवः ।
सर्वेवर्णामहेशानिलीयन्तेप्रणवेप्रिये ॥ ११ ॥

अतएवमहेशानिप्रणवोब्रह्मरूपकः ।
स्त्रीशूद्रयोःपरेशानिप्रणवेनाधिकारिता ॥ १२ ॥

साधक गुरुदेवके मुख से इस महामंत्र प्रणव को प्राप्त करे, हे प्रिये ! एक प्रणवही समस्त वर्णों में लीन है । हे देवि महेशानि ! इस कारण प्रणवही साक्षात् ब्रह्मरूप है, स्त्री और शूद्रकूं इस प्रणव का अधिकार नहीं तौ भी स्त्री शक्ति स्वरूप है, हे देवि ! विचार करके देखो ब्राह्मण और दीक्षित मनुष्य प्रणव मंत्रका जप करतेहैं इस कारण उनका शरीर शव साधनादि कार्यमें उपयोगी नहीं है ॥ ११ ॥ १२ ॥

तज्जातश्चैवचाण्डालःसर्वमंत्रविवर्जितः ।
मंत्रहीनेतुअस्थ्यादिसर्ववर्णविभूषितम् ॥ १३ ॥

स्त्री और शूद्र इन दोनोंहीसे चाण्डालकी उत्पत्ति है इसी कारण वे सब मंत्रोंसे हीन हैं और जो लोग मन्त्र रहितहैं उनकी अस्थियोंमें सब वर्ण शोभितहैं ॥ १३ ॥

अकारादिक्षकारान्ताअस्थिमध्येस्थिताःसदा ।
तिलार्द्धंचास्थिमध्येचपंचाशद्वर्णरूपिणी ॥ १४ ॥
अतएवबहिःकण्ठेग्रीवायांचतथाकरे ।
सर्वत्राहंपरेशानिमहाशंखविभूषितः ॥ १५ ॥

हे देवि ! अकारसे लेकर "क्ष" नक यह सब वर्ण अस्थियोंके बीचमें विद्यमानहैं, एवं एक तिलकी बराबर भी पचास वर्ण रूप वाली माला रही है, हे महेशानि ! इस कारणही मैंने गलेमें और हाथ इत्यादि सब शरीरमें महाशंखकी मालासे शोभित रहता हूं ॥ १४ ॥ १५ ॥

महाशंखाख्यमालायांयोजपेत्साधकोत्तमः ।
अणिमादिविभूतीनामीश्वरोनात्रसंशयः ॥ १६ ॥

हे देवि ! जो साधक इस उत्तम महाशंखकी मालासे जप करतेहैं उनको अणिमादि आठों सिद्धि प्राप्त होजातीहैं और इसमें सन्देह नहीं ॥ १६ ॥

सर्ववर्णमयीमालासर्वदेवेषुयोजिता ।
वर्णहीनंनास्तिमंत्रङ्कदाचिदपिपार्वति ॥ १७ ॥
महाशंखंमहेशानिसर्ववर्णविभूषितम् ।
अतएवमहाशंखंसर्वतंत्रेषुयोजितम् ॥ १८ ॥

यह महाशंखकी माला सर्ववर्णमयी है और यह माला सब देवताओंमें भी योजित होतीहै हे पार्वति ! इस कारण कदाचित् वर्ण हीन मन्त्र नहीं होसक्ता, किन्तु महाशंखकी माला सब वर्णोंसे विभूषित है इस कारण महाशंखही सब प्रकारसे मन्त्र जपनेमें श्रेष्ठ है ॥ १७ ॥ १८ ॥

यदिभाग्यवशाद्देविमहाशंखंचलभ्यत ।
ससिद्धःसगणःसोऽपिसचविष्णुर्नसंशयः ॥ १९ ॥

हे देवि ! यदि भाग्यके वशसे कोई महाशंखकी मालाको पा सकै तो वह मनुष्य अपने कुटुम्बके सहित सिद्धिलाभ कर सकता है और स्वयं विष्णुकी समान हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १९ ॥

तदैवसहसासिद्धिर्नात्रकार्याविचारणा ।
गोपुच्छसदृशींकुर्यादथवासर्परूपिणीम् ॥ २० ॥

इस प्रकार देवीकी आराधना करनेसे शीघ्रही सिद्धि प्राप्त होती है इस विषयमें किसी प्रकारका विचार नहीं करना चाहिये, इस महाशंखकी मालाको गौकी पूंछकी समान अथवा सर्पके आकारकी समान बनानी चाहिये अर्थात् मालाकी जड़तो मोटी बनावै, और फिर क्रमसे पतली बनावै ॥ २० ॥

स्थूलासूक्ष्माचपर्यन्तंक्रमेणग्रथनंचरेत् ।
मूलेनग्रथनंकार्यंप्रणवेनाथवाप्रिये ॥ २१ ॥

पहले मोटी तरफसे सब मालाको बनाकर फिर क्रमानुसार छोटे से छोटी बनाता जाय. हे प्रिये ! साधक अपने इष्ट देवका मन्त्र अथवा प्रणव मन्त्रसे मालामें गांठ लगावै ॥ २१ ॥

ब्रह्मग्रन्थिंप्रयत्नेनदद्यात्साधकसत्तमः ।
सूत्रद्वयंपरेशानिमिलितंकारयेत्ततः ॥ २२ ॥

बुद्धिमान साधक यत्नके साथ ब्रह्मगांठसे उस मालाको बनावै. हे सुरेश्वरि ! जब सब माला बनजाय तब दोनों ओरके डोरोंको मिलावै ॥ २२ ॥

मेरोश्चग्रहणंकार्यंतदूर्द्ध्वेग्रन्थिसंयुतम् ।
समीपेगुरुदेवस्यसंस्कारमाचरेत्सुधीः ॥ २३ ॥

फिर उनमें गिरै लगाकर उसके ऊपर एक लम्बादाना पिरोवै फिर उसके ऊपर ब्रह्मगांठ लगावै अनन्तर बुद्धिमान साधक अपने गुरुसे इस मालाका संस्कार करावै ॥ २३ ॥

स्थूलावधिजपेन्मंत्रंसूक्ष्मभागेसमापयेत् ।
पुच्छावधिजपाद्देविसिद्धिहानिःप्रजायते ॥ २४ ॥

माला जिधरसे स्थूल हो उसी ओरसे जप करना प्रारम्भ करै और जिधर पतली हो उस तरफ समाप्त करै, इसप्रकार बार बार मोटी ओरसेही जप करना चाहिये । हे देवि ! मालाके पतली ओरसे जप करनेसे सिद्धि कार्यमें हानि होगी ॥ २४ ॥

शिवेध्यात्वाजपेन्मालांगुरोर्ध्यानपुरःसरम् ।
तदैवलभतेसिद्धिंसाधकःशान्तमानसः ॥ २५ ॥

हे शिवे ! गुरुदेवका ध्यान कर मालाका जप करै, ऐसा करनेसे साधक सिद्धिको प्राप्तकर शान्तचित्त होजाता है ॥ २५ ॥

संभाव्यमालांभुजगेनतुल्यां कथाप्रसंगेनइवप्रजप्यात्।जपेन्मदङ्गंलभतेतवाङ्गं प्रदीप्यकात्यायनि कामनादम् ॥ २६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे एकादशः पटलः समाप्तः ॥ ११ ॥

इस मालाको भुजंगम (सर्प) की समान जानकर कथाके प्रसंगकी समान अर्थात् न तो बहुत जलदी और न बहुत विलम्बमें जप हो ऐसा करै, हे देवि ! हे कात्यायनि ! इस प्रकार साधक हमारे अंगस्वरूप मन्त्र जप करकै कामनादिको दग्धकर तुम्हारे अंगको प्राप्त हो सकैगा ॥ २६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

द्वादशः पटलः १२.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेवसंसारार्णवतारक ।
वेदमातेतिविख्यातागायत्रीचकथंभवेत् ॥ १ ॥

श्री पार्वतीजी बोली हे देवदेवमहादेव ! तुम भक्तोंको संसार रूपी सागरसे उद्धार करते हो इस समय वेदमाता गायत्रीको मेरे निकट कहो ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिगायत्रींपरमाक्षरीम् ।
वेदमातेतिविख्यातासर्वतंत्रप्रपूजिता ॥ २ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं परमाक्षरी गायत्रीको तुम्हारे निकट कहता हूं श्रवण करो, यह गायत्री वेदमाता कहकर विख्यात हुई है और सब तंत्रों में इसकी पूजा कहीहै ॥ २ ॥

हालाहलंसमुद्धृत्यनाभ्यक्षरंसमुद्धरेत् ।
वामकर्णयुतंकृत्वापुनर्नाभिंसमुद्धरेत् ॥ ३ ॥
कर्णयुक्तंमूर्द्धि रेफंततश्चसुरवन्दिते ।
वारणंरसनायुक्तंचन्द्रबीजंततःपरम् ॥ ४ ॥
लान्तयुक्तंसर्गयुक्तंचैवंव्याहृतिमुद्धरेत् ।
तत्पदंचसमुद्धृत्यसवितुस्तदनन्तरम् ॥ ५ ॥
वरेण्यमितिचोच्चार्यभर्गोदेवस्यधीमहि ॥
धियोयोनःप्रचोदयात्प्रणवंतदनन्तरम् ॥ ६ ॥

पहले ॐ यह वर्ण उच्चारण करके नाभ्यक्षर अर्थात् "भ" इस वर्ण को उद्धार करै, फिर भकार में दीर्घ ऊकार को लगाकर फिर भकार मे ह्रस्व उकार और उसके ऊपर रेफ को मिलावै। अनन्तर "व" इस अक्षर को लेकर उसमें विसर्ग लगावै विसर्ग के पीछे दंन्त्य

सकार को लगाना चाहिये फिर इस सकार में वकार लगाकर विसर्ग युक्त करै, हे सुर पूजित ! इस प्रकार "भूर्भुवःस्वः" इस व्याहृति मंत्र को बनाकर उसके पीछे "तत्" इस को और उसके पीछे "सवितुः" यह पद लगावै। इस के पीछे "वरेण्यं" यह पद उच्चारण करै "भर्गो देवस्य धीमहि" फिर इस वाक्य को बनावै। इसके पीछे "धियो यो नः प्रचोदयात्" इस पदको लगावै फिर "ॐ" इस वर्णका योग करै हे देवि ! इस प्रकार क्रमशः वर्णके लगानेसे गायत्री मंत्र बनैगा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

इतिजप्त्वामहेशानिसाक्षान्नारायणोभवेत् ।
धियोयोर्मध्यभागेचंयकारद्वयमेवच ॥ ७ ॥
अतएवमहादेविअनन्तश्रुतिरेवच ।
इतिजप्त्वामहेशानिमुक्तोभवतितत्क्षणात् ॥ ८ ॥

हे महेशानि ! इस प्रकारसे गायत्रीका जप कर साधक साक्षात् नारायण होजाता है, हे महादेवि ! "धियोयोनः" इस शब्दके बीचमें जो दो यकार हैं वह अनन्त श्रुतिके स्वरूप हैं, इस कारण इस प्रकार गायत्रीं के जप करने से साधक तत्क्षणात् मुक्त होजाता है ॥७॥ ८॥

[1]अन्त्ययकारयोःस्थानेजोकारइतियःपठेत् ।
सचाण्डालइतिख्यातोब्रह्महत्यादिनेदिने ॥ ९ ॥

---

१ प्रक्षिप्तमिदं वैदिकरीतिविरोधात् ।

इस प्रकार जो दोनों यकारोंको कोई जकार कह कर उच्चारण करते हैं, यह चांडाल कह कर विख्यात होते हैं, आर उनको दिन २ ब्रह्महत्या के पाप लगतेहैं ॥ ९ ॥

अतएवमहेशानितवस्नेहात्प्रकाशितम् ।
दशभिर्जन्मजनितंशतेनचपुराकृतम् ॥ १० ॥
त्रियुगन्तुसहस्रेणगायत्रीहन्तिपातकम् ।
लक्षंजप्त्वातुतांदेवींगायत्रींपरमाक्षरीम् ॥
सर्वसिद्धीश्वरोभूत्वादेववद्विहरेत्क्षितौ ॥ ११ ॥

हे महेश्वरि! इस कारण मैंने तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर तुम्हारे निकट इस गायत्री को प्रकाशित किया इस गायत्री को दशबार जपनेसे भी मनुष्यके इस जन्म के किये हुए पाप दूर होजाते हैं। सौबार जप करनेसे पूर्व जन्म के किये हुए पाप और हजार बार जप करनेसे ३ युगों से इकठ्ठे हुए पाप सभी नष्ट होजाते हैं एक लाख बार इस पराक्षरी गायत्री का जप करनेसे साधक सब सिद्धियोंका अधीश्वर होकर पृथ्वीमें देवताओंकी समान विचरण करता है॥ १० ॥ ११ ॥

यद्गृहेविद्यतेदेविएतत्तन्त्रंसुधामयम् ।
तद्गृहंपरमेशानिकैलाससदृशंसदा ॥ १२ ॥

हे महेश्वरि ! जिसके घरमें यह अमृतकी समान तंत्र विद्यमान है उसका घर कैलासकी समान जानो ॥ १२ ॥

नित्यंचपूजयेत्तंत्रंससिद्धोनात्रसंशयः ।
नित्यंनित्यंमहेशानियःस्पृशेत्तन्त्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥
सपूतःसर्वपापेभ्यश्चान्तेशिवमयोभवेत् ।
योवैलिखेदिमंतंत्रंशिववाक्यंसुधामृतम् ॥ १४ ॥
गङ्गास्नानसमंपुण्यमन्तेशिवमवाप्नुयात् ।
योयत्रपठतेनित्यंतंत्रराजमिदंशुभम् ।
ससर्वदुष्कृतिंतीर्त्वाअन्तदेवीपदंव्रजेत् ॥ १५ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे द्वादशः पटलः समाप्तः ॥ १२ ॥

जो मनुष्य सर्वदा इस तंत्रको पूजा करता है वह निश्चय ही सिद्धि को पाताहै । हे महेशानि ! जो प्रतिष्ठित उत्तम तंत्रका स्पर्श करता है उसके सब पापोंसे पवित्र होकर अंत में शिवमय होजाता है । जो इस अमृतकी समान शिवजीके वाक्य स्वरूप तंत्रको लिखकर ब्राह्मणको देता है वह गंगास्नानके समान पुण्यको प्राप्त करता है और अंतमें शिवजीके लोकको जाता है । जो मनुष्य किसी स्थान

में स्थित होकर प्रतिदिन इस तंत्रराजका पाठ करता है उसके सब पाप नष्ट होजाते हैं और अंतमें देवीके पदको प्राप्त होजाता है ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे पं० बलदेवप्रसाद-
मिश्रकृतभाषाटीकायां द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

इति भाषाटीकासमेत गुप्तसाधनतन्त्र समाप्त.

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फेक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS